Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۭ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

अनुवाद: हे लोगो जो ईमान लाए हो उस में से खर्च करो जा तुम्हें प्रदान किया गया है इस से पहले कि वह दिन आ जाए जिस में न कोई व्यापार होगा और न कोई दोस्ती और न कोई सिफारिश और काफिर ही हैं जो अत्याचार करने वाले हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 31

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

19 ज़विल कअदा 1439 हिजरी कमरी 2 ज़हूर 1397 हिजरी शमसी 2 अगस्त 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

मैं तुम्हें सच सच कहता हूं कि जो मनुष्य क़ुर्आन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति द्वार को स्वयं अपने लिए बंद करता है। वास्तविक और पूर्ण मुक्ति के मार्ग क़ुर्आन ने प्रदर्शित किए, शेष सभी उसकी तुलना में छाया मात्र थे। अत: तुम क़ुर्आन का पूरी सतर्कता से अध्ययन करो और उससे अत्यधिक प्रेम करो, ऐसा प्रेम जो तुम ने किसी से न किया हो।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मैंने सुना है कि तुम में से कुछ हदीस को बिल्कुल नहीं मानते । यदि वे ऐसा करते हैं तो यह उनकी बहुत बड़ी भूल है । मैंने यह शिक्षा नहीं दी कि ऐसा करो, अपितु मेरा दृष्टिकोण यह है कि तीन चीज़ें हैं जिन्हें ख़ुदा ने तुम्हारे पथ-प्रदर्शन हेतु दिया है । सर्व प्रथम1 क़ुर्आन है जिसमें ख़ुदा का एकेश्वरवाद का सिद्धांत, प्रतिष्ठा और गरिमा का वर्णन है। जिसमें उन विवादों के संदर्भ में न्याय किया गया है जो यहूदी और ईसाइयों में थे। जैसा कि यह विवाद और दोष कि ईसा इब्ने मरयम सलीब द्वारा मारा गया और वह लानती हुआ और अन्य नबियों की भांति उसे मुक्ति नहीं मिली उसे आध्यात्मिक श्रेष्ठता प्राप्त नहीं हुई । इसी प्रकार क़ुर्आन कदापि आज्ञा नहीं देता कि ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य किसी की उपासना की जाए, न मनुष्य की, न जानवर की न सूर्य की न चन्द्रमा की न किसी नक्षत्र की न भौतिक साधनों की और न स्वयं की। अत: तुम सावधान रहो। ख़ुदा की शिक्षा और क़ुर्आन के पथ-प्रदर्शन के विपरीत एक पग भी न उठाओ। मैं तुम्हें सच सच कहता हूं कि जो मनुष्य क़ुर्आन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति द्वार को स्वयं अपने लिए बंद करता है। वास्तविक और पूर्ण मुक्ति के मार्ग क़ुर्आन ने प्रदर्शित किए, शेष सभी उसकी तुलना में छाया मात्र थे। अत: तुम क़ुर्आन का पूरी सतर्कता से अध्ययन करो और उससे अत्यधिक प्रेम करो, ऐसा प्रेम जो तुम ने किसी से न किया हो। क्योंकि जैसा ख़ुदा ने मुझे संबोधित करते हुए फ़रमाया

اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْاٰنِ- (अलख़ैरो कुल्लुहू फ़िलक़ुर्आन)

कि समस्त प्रकार की भलाइयां क़ुर्आन में हैं। यही बात सत्य है। खेद है उन लोगों पर जो किसी अन्य वस्तु को उस पर प्राथमिकता देते हैं। तुम्हारी सम्पूर्ण सफलता और मुक्ति का स्रोत क़ुर्आन में निहित है। तुम्हारी कोई भी धार्मिक आवश्यकता ऐसी नहीं जिसका समाधान क़ुर्आन में न हो । प्रलय के दिन तुम्हारे ईमान के सच्चे या झूठे होने की कसौटी क़ुर्आन है। आकाश के नीचे क़ुर्आन के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं जो किसी अन्य पर निर्भर हुए बिना तुम्हारा पथ-प्रदर्शन कर सके। ख़ुदा ने तुम पर अपार कृपा की है जो क़ुर्आन जैसी पुस्तक तुम्हें प्रदान की। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि वह पुस्तक जो तुम्हारे सम्मुख पढ़ी गई यदि ईसाइयों के सम्मुख पढ़ी जाती तो वे तबाह न होते । यह उपकार और पथ-प्रदर्शन जो तुम्हें उपलब्ध किया गया यदि तौरात (बाईबल) को छोड़कर यहूदियों को उपलब्ध कराया जाता तो उनके कुछ समूह प्रलय का इन्कार न करते। अत: इस उपकार के महत्व को समझो जो तुम्हारे साथ किया गया। यह अति उत्तम उपकार है, यह अपार सम्पत्ति है । यदि क़ुर्आन न आता तो समस्त संसार एक अपवित्र और तुच्छ लोथड़े की भांति था । क़ुर्आन वह पुस्तक है जिसके समक्ष सभी पथ-प्रदर्शन तुच्छ हैं । इन्जील को लाने वाला रूहुलक़ुदुस (फ़रिश्ता) कबूतर के रूप में प्रकट हुआ था जो एक निर्बल और कमज़ोर पक्षी है जिसे बिल्ली भी दबोच सकती है । इसलिए दिन प्रतिदिन कमज़ोरी के गढ़े में गिरते गए और उनमें आध्यात्मिकता शेष न रही क्योंकि उनके ईमान का समस्त आधार कबूतर पर था । परन्तु क़ुर्आन का रूहुलक़ुदुस उस श्रेष्ठतम रूप में प्रकट हुआ था जिसने धरती से लेकर आकाश तक को अपने अस्तित्व से भर दिया । कहां वह निर्बल कबूतर और कहां यह अदभुत और अलौकिक प्रकाश जिस का विवरण क़ुर्आन में भी है। क़ुर्आन एक सप्ताह में मनुष्य को पवित्र कर सकता है यदि तुम स्वयं उससे दूर न भागो । क़ुर्आन के अतिरिक्त किसी अन्य पुस्तक ने प्रारंभ में ही अपने अध्ययन कर्ताओं को यह प्रार्थना नहीं सिखाई और न ही यह आशा दिलाई कि-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

''इहदि नस्सिरातल मुस्तक़ीमा सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम''

अर्थात हमें अपनी उन नैमतों का मार्ग दिखा जो हमसे पूर्व लोगों को दिखाया गया, जो नबी, सिद्दीक़, शहीद और सालिह थे। अत: अपने साहस को दृढ़ करो और क़ुर्आन के निमंत्रण की अवहेलना मत करो कि वह तुम्हें वे पुरस्कार देना चाहता है जो तुम से पूर्व लोगों को दिए थे। क्या उसने तुम्हें बनी इस्राईल का देश और बैतुल मुक़द्दस प्रदान नहीं किया जो आज तक तुम्हारे अधिकार में है। अत: हे निर्बल आस्था और निर्बल साहस रखने वालो ! क्या तुम्हारा यह विचार है कि तुम्हारे ख़ुदा ने भौतिक रूप में तो बनी इस्राईल की समस्त सम्पत्तियों का उत्तराधिकारी बना दिया परंतु आध्यात्मिक रूप में तुम्हें उत्तराधिकारी न बना सका, जब कि ख़ुदा की इच्छा है कि उनकी अपेक्षा तुम्हें अधिक लाभ पहुंचाए। ख़ुदा ने तुम्हें उनके भौतिक और आध्यात्मिक साधनों और धन सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाया, पर तुम्हारा उत्तराधिकारी कोई अन्य न होगा यहां तक कि प्रलय आ जाए । ख़ुदा तुम्हें अपनी वाणी और वार्तालाप से कभी वंचित नहीं रखेगा। वह तुम्हें वे समस्त नैमतें प्रदान करेगा जो अतीत में तुम्हारे पूर्वजों को प्रदान की गईं। परंतु जो मनुष्य उदण्डता का मार्ग अपनाते हुए ख़ुदा पर झूठ बांधेगा और कहेगा कि ख़ुदा की वाणी मुझ पर आई है हालांकि

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-3)

☆ नमाज़ ख़ुदा का हक है इसे अदा करो अगर सारा घर नष्ट होता है तो हो जाने दो परन्तु नमाज़ को तर्क न करो वे काफिर और मुनाफिक हैं जो नमाज़ को मन्हूस कहते हैं और कहा करते हैं कि नमाज़ के शुरु करने से हमारा अमुक नुकसान हुआ है नमाज़ कदापि अल्लाह के क्रोध का माध्यम नहीं। जो इसे मन्हूस कहते हैं उन के अन्दर स्वयं ज़हर है जैसे बीमार को मीठा कड़वा लगता है वैसे ही उन को नमाज़ में मज़ा नहीं आता यह धर्म को ठीक करती है और दुनिया को ठीक करती है। नमाज़ का आनन्द दुनिया के प्रत्येक आन्नद पर विजयी है शारीरिक आन्नद का लिए हज़ारों खर्च करते हैं और फिर उन का परिणाम बीमारियां होती हैं और यह मुफ्त की जन्नत है जो उस को मिलती है। कुरआन शरीफ में जो जन्नतों का वर्णन है उन में से एक दुनिया की जन्नत है और वह नमाज़ है।

हम मुसलमान हैं। हम कुरआन पढ़ते हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर विश्वास करते हैं। अल्लाह तआला के एक होने पर विश्वास रखते है। इस्लाम को अंतिम धर्म समझते हैं। अंतिम कुरआन को अन्तिम पुस्तक को समझते हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आख़री नबी समझते हैं। कलिमा तय्यबा पढ़ते हैं इस लिए हम मुसलमान हैं।

हुज़ूर अनवर के साथ मज्लिस अत्फालुल अहमदिया डेनमार्क की क्लास तथा सुनहरे उपदेश

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

8 मई 2016 (दिनांक इतवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ अत्फाल की कक्षा

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार साढ़े छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ लजना हॉल में आए, जहां हुज़ूर अनवर के साथ अत्फाल तथा नासरात का एक अलग कार्यक्रम था।

सबसे पहले, अत्फाल की कक्षा शुरू हुई। कार्यक्रम का आरम्भ कुरआन की तिलावत के साथ शुरू हुआ, जो अज़ीज़ साइम अहमद ने की और इस का उर्दू अनुवाद, अज़ीज़ मुहम्मद अनस महमूद ने प्रस्तुत किया। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "आपने केवल उर्दू का अनुवाद किया है इन बच्चों को इन की क्या समझा आई होगी? इन को समझाने के लिए डेनिश अनुवाद किया जाना चाहिए था। इन को पता नहीं लगता की इन के क्या अर्थ है

इस के बाद प्रिय शायन महदी ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निम्नलिखित हदीस प्रस्तुत किया।

" हज़रत अबू अय्यूब अंसारी बताते हैं कि एक आदमी ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सेवा में अर्ज़ किया हे अल्लाह के रसूल कोई ऐसा काम बताइए जो मुझे स्वर्ग में ले जाए और आग से दूर कर दे। आप ने फरमाया अल्लाह तआला की इबादत करो करो। इसके साथ किसी को भी साझा न करो। नमाज़ पढ़ो। ज़कात दो और रिश्तेदारों के साथ प्यार तथा मुहब्बत से रहो। "

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आपने कुरआन करीम की तिलावत कर दी है। हदीस पढ़ा जाता है। इस की आप को क्या समझ आई

कुरआन करीम की आयत में अल्लाह तआला पर भरोसा का वर्णन था। अल्लाह तआला पर भरोसा करने का क्या मतलब है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अल्लाह तआला पर भरोसा यह है कि वही है जो सब कुछ देने वाला है केवल उसी पर भरोसा करना चाहिए। ख़ुदा तआला को प्रत्येक वस्तु को बचाने वाला समझना चाहिए। तुम पढ़ाई करो कड़ी मेहनत करो अपनी पूरी कोशिश करो, फिर अल्लाह तआला पर भरोसा करो कि वह तुम्हें अच्छा पर्चा करने की तौफीक़ प्रदान करे और अल्लाह तआला से दुआ करते रहो। लोगों से उम्मीद रखने के स्थान पर प्रत्येक चीज़ की आशा अल्लाह तआला ने रखो।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "मुझे बताओ शिर्क क्या है? ऐसा कहा जाता है कि शिर्क का अर्थ यह है कि किसी और को ख़ुदा तआला के मुकाबला में ख़ुद समझना, अकेले उसी से मांगना और उस की इबादत करना है। काफिर लोग बुतों की इबादत करते हैं इसलिए वे शिर्क करते हैं। उन्होंने ख़ुदा तआला के ख़िलाफ अपनी मूर्तियां बना रखी हैं। ख़ान काबाा में मूर्तियों की पूजा करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। इस प्रकार वे शिर्क करते थे

ज़कात के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि इसका मतलब है कि ख़ुदा तआला के मार्ग में, धन खर्च करना ताकि वह माल को शुद्ध कर दे और फिर तुम्हारे लिए संपत्ति में वृद्धि करे।

कुरआन करीम में है कि नमाज़ पढ़ा करो। ज़कात दिया करो इस का अर्थ यह है कि जो अल्लाह तआला के रास्ता में खर्च करो। चैरिटी में दो, चंदा में दो, लोगों की सहानुभूति के लिए खर्च करो, धर्म की सेवा के लिए खर्च करो, यह बात ज़कात की श्रेणी में शामिल है।

फिर ज़कात इस्लाम में एक विशेष प्रकार का चन्दा है और इसकी एक स्तर है। जो लोग एक वर्ष में बैंक में एक निश्चित राशि रखते हैं, तो एक साल बाद, इस राशि के कुछ हिस्सा ख़ुदा तआला के मार्ग में देते हैं।

फिर सोना पर ज़कात है चांदी पर ज़कात है। इन दोनों का एक सटीक निसाब है। वर्ष गुज़र जाने के बाद उसका चालीसवां भाग ज़कात अदा करते हैं। इन चीजों पर ज़कात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग से निर्धारित है इसी तरह कुछ और चीज़ें भी हैं जिन पर ज़कात है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया सिला रहमी क्या होती है सिला रहमी यह होती है कि आपस में रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार करना। आपस में मिल जुल कर रहना,

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत अम्मार रज़ि अल्लाह की सीरत के बारे में पिछले ख़ुत्बा में वर्णन की गई बातों के अतिरिक्त अन्य बातों का वर्णन।

इसी प्रकार हज़रत अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुन्ज़िर का हालात तथा सीरत का ईमान वर्धक वर्णन।

धर्म का ज्ञान सीखना, कुरआन का ज्ञान सीखना यह तो अब प्रत्येक के लिए उपलब्ध और फायदेमंद है, और अल्लाह तआला ने इस युग में हमें एमटी के माध्यम से ऐसा माध्यम प्रदान कि है जिसके माध्यम से हम अगर चाहें तो धर्म का ज्ञान सीख सकते हैं कुरआन के दर्स इस में होते हैं हदीस के दर्स होते हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों के दर्स होते हैं ख़ुत्बे हैं दूसरे ख़त्बे हैं। जलसे हैं तो कम से कम तदनुसार अगर हम अपने आप को भी और अपनी नस्लों को भी इस माध्यम से जोड़ लें तो यह प्रशिक्षण का एक बहुत अच्छा माध्यम है ख़िलाफत से संबंध स्थापित होता है और हर प्रकार के उपद्रव और शरारत से बचाने वाला भी है और धार्मिक ज्ञान में भी वृद्धि कराने वाला है इस लिए इस तरफ जमाअत के लोगों को बहुत ध्यान देना चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो एम टी ए का माध्यम प्रदान किया है इस से अपने आप को जोड़ें।

आदरणीय काज़ी शुअबान अहमद साहिब पुत्र काज़ी सुलैमान अहमद साहिब की लाहौर (पाकिस्तान) में शहादत, शहीद मरहूम का वर्णन और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब।

आदरणीया अमतुल हई साहिबा पुत्री सेठ मुहम्मद ग़ौस साहिब की वफात, मरहूम का जिक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 जून 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले जुम्मे में मैं हज़रत अम्मार रज़ि अल्लाह के बारे में ज़िक्र कर रहा था, उन के बारे में कुछ और रिवायतें थीं वे भी आज वर्णन करूंगा।

हज़रत हसन रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि हज़रत अम्रो बिन आस ने कहा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस व्यक्ति से अपनी मृत्यु के दिन तक प्यार करते रहे हों मुझे उम्मीद है कि ऐसा नहीं होगा कि अल्लाह तआला उसे जहन्नम में डाल देगा। लोगों ने कहा कि हम यह देखते थे कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम से प्यार करते थे और तुम को आमिल बनाते थे। हज़रत अम्रो बिन आस ने कहा कि अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझ से प्यार करते थे या मेरा दिल रखते थे लेकिन हम आपको एक व्यक्ति से प्रेम करते देखते थे लोगों ने कहा कि वह कौन व्यक्ति है। उम्रो बिन आस ने कहा कि अम्मार बिन यासिर वह व्यक्ति था जिससे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमेशा प्यार किया करते थे। लोगों ने उस बात को सुन कर कहा कि जंगे सफ्फान में तुम लोगों ने तो ही उन्हें शहीद कर दिया था। हज़रत अम्रो बिन आस तब अमीर मुआविया की तरफ थे तो हज़रत अम्रो बिन आस ने कहा कि अल्लाह तआला की क़सम हम ने ही उन्हें कत्ल किया है।

एक और रिवायत है कि हज़रत अम्रो बिन आस कहते हैं कि मैं दो आदमियों के बारे में गवाह हूँ कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी मृत्यु तक उन्हें प्यार करते थे वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद और हज़रत अम्मार बन यासिर थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 199 अम्मार बिन यासिर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 1990 ई)

अबू बकर बिन मुहम्मद बिन अम्रो बिन हज़्म अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत अम्मार बिन यासिर को शहीद कर दिया गया तो अम्रो बिन हज़्म हज़रत अम्रो बिन आस के पास आए और कहा कि अम्मार को शहीद कर दिया गया है और मैंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना है कि विद्रोही समूह आप को शहीद करेगा तो हज़रत अम्रो घबरा कर उठे और हज़रत मुआविया के पास गए हज़रत मुआविया ने पूछा कि ख़ैरियत तो है उन्होंने कहा कि हज़रत अम्मार बिन यासिर को शहीद कर दिया हज़रत मुआविया ने पूछा कि अम्मार को शहीद कर दिया गया है तो क्या हुआ हज़रत अम्रो ने कहा कि मैंने अल्लाह तआला के रसूल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना है कि एक विद्रोही समूह आप को मार डालेगा और मुआविया ने कहा क्या हम ने उन्हें शहीद किया है उन को तो अली और उसके साथियों ने मरवाया है जिन्होंने उन्हें लाकर हमारे भालों के सामने या हमारी तलवारों के सामने डाल दिया।

(अल्मुस्तदरक अलस्सहीहैन जिल्द 3 पृष्ठ 474 किताब मअरूफा अस्सहाबा ज़िक्र मनाकिब अम्मार बिन यासिर हदीस 5726 प्रकाशन दारुल हरमैन लित्तबाअत वन्नशर वत्तऔज़ीअ 1997 ई)

बहरहाल हज़रत अम्रो बिन आस में एक अच्छाई थी जो उन्हें चिंता पैदा हुई लेकिन अमीर मुआविया ने इसे इतना महत्त्व नहीं दिया लेकिन बहरहाल सहाबा को बड़ी चिंता होती थी जब उन्हें कोई रिवायत पहुंचती थी या ख़ुद उन्होंने कभी सुना है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी के बारे में सचेत किया है या किसी को अच्छी खबर की सूचना दी है।

हज़रत आइशा ने हज़रत अम्मार के बारे में कहा कि वह एड़ियों से लेकर अपने सिर की चोटी तक ईमान से भरे हुए थे।

(फज़ायल सहाबा इमाम अहमद बिन हंबल अनुवादक पृष्ठ 520 फज़ायल सय्यदना अम्मार बिन यासिर अनुावदक नवीद अहमद बशार प्रकाशक कारनर प्रिंटर पब्लीशर 2016 ई)

हज़रत ख़ुबाब हज़रत उमर की सेवा में दिखाई दिए और उमर ने उनसे कहा, "क़रीब आ जाओ, इस मज्लिस का आप से अधिक कोई हकदार नहीं केवल अम्मार को छोड़कर। फिर हज़रत ख़ुबाब हज़रत उमर को अपनी कमर के घावों के निशान दिखाने लगे जो उन्हें मुशरेकीन ने पहुंचाए थे ।

(सुनन इब्ने माजा किताबुस्सुनत फज़ायल ख़बाब हदीस 153)

हज़रत उमर आप का सम्मान कर रहे थे क्योंकि उन्होंने प्रारंभिक काल में बहुत कष्ट सहन किए और साथ ही हज़रत अम्मार के बारे में बताया कि उन्होंने ने भी बहुत परेशानियां सहन कीं हैं।

एक रिवायत हज़रत अम्मार रज़ि अल्लाह की हज़रत अली रज़ि अल्लाह के शहीद होने के बारे में भी है जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

भविष्यवाणी के बारे में है। हज़रत अम्मार बिन यासिर से रिवायत है कि बार जंग ज़ातुल इश्रा में मैं और हज़रत अली साथ थे। जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक स्थान पर पड़ाव डाला। हम ने बनू मुदलिज के कुछ लोगों को देखा जो आपने बाग़ों के चश्मा में काम कर रहे थे। हज़रत अली ने मुझे कहा कि आओ उन लोगों के पास चलकर देखते हैं कि वे कैसे काम करते हैं, इसलिए हम थोड़ी देर के लिए उनके पास गए, हमने उन का काम देखा और हम सो गए। थोड़ी देर के लिए हम ने उन के काम को देखा फिर हमें नींद आ गई। अत: मैं और हज़रत अली वापस आ गए और बाग़ में मिट्टी के ऊपर ही लेट गए। अल्लाह की कसम है कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ही आकर उठाया और जगाया। आप हमें पांव से हिला रहे थे और हम मिट्टी से लथपथ हो गए थे। उस दिन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली से कहा, "हे अबू तुराब उस मिट्टी के कारण जो उन के चेहरे पर नज़र आ रही थी। आप ने उन को अबू तुराब कहा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या मैं तुम्हें उन दो आदमियों के बारे में न बताओं जो लोगों में सबसे बुरे हैं। आपने फ़रमाया एक तो क़ौम समूद का वह लाल और सफेद आदमी जिसने ऊंटनी की कौंचें काटी थी और दूसरा वह आदमी हे अली जो तुम्हारे सिर पर वार करेगा और तुम्हारी दाढ़ी खून से तर कर देगा।

(मसनद अहमद बिन हंबल जिल्द 6 पृष्ठ 261 हदीस अम्मार बिन यासिर हदीस 18511 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

अबू मज्लिज़ कहते हैं कि एक बार हज़रत अम्मार बन यासिर ने छोटी सी नमाज़ पढ़ी उनसे किसी ने इसकी वजह पूछी तो हज़रत अम्मार ने कहा कि मैं अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नमाज़ में थोड़ा सा भी अन्तर नहीं किया है।

(मसनद अहमद बिन हंबल जिल्द 6 पृष्ठ 262 हदीस अम्मार बिन यासिर हदीस 18514 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

इस रिवायत का एक विस्तृत विवरण इस प्रकार भी मिलता है। अबू मज्लिज़ के संदर्भ से ही है कि एक बार हज़रत अम्मार बिन यासिर ने हमें बहुत छोटी सी नमाज़ पढ़ाई। लोगों को इस पर बहुत आश्चर्य हुआ। हज़रत अम्मार ने कहा, क्या मैंने रुकूअ और सिज्दे पूर्ण नहीं किए। उन्होंने कहा। हज़रत अम्मार ने कहा मैंने इस में एक दुआ की है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मांगा करते थे। और वह दुआ यह है

اَللّٰهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبَ وَقُدْرَتِكَ عَلَى الْخَلْقِ أَحْيِنِيْ مَا عَلِمْتَ الْحَيَاةَ خَيْرًا لِّيْ وَتَوَفَّنِيْ إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّيْ۔ اَسْأَلُكَ خَشْيَتَكَ فِي الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَكَلِمَةَ الْحَقِّ فِي الْغَضَبِ وَالرِّضَا وَالْقَصْدَ فِي الْفَقْرِ وَالْغِنٰى وَلَذَّةَ النَّظَرِ إِلٰى وَجْهِكَ وَالشَّوْقَ إِلٰى لِقَائِكَ وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ ضَرَّاءَ مَضَرَّةٍ وَمِنْ فِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ۔ اَللّٰهُمَّ زَيِّنَّا بِزِيْنَةِ الْإِيْمَانِ وَاجْعَلْنَا هُدَاةً مَّهْدِيِّيْنَ۔

हे अल्लाह भविष्य का ज्ञान तुझे ही है और सारी सृष्टि पर तू ही हावी है। तू मुझे उस समय तक ज़िन्दा रख तब तक तेरे ज्ञान में ज़िन्दगी मेरे लिए अच्छी है। और मुझे उस समय मृत्यु दे जब मृत्यु मेरे लिए बेहतर होती है। हे अल्लाह मैं ग़ैब और हाज़िर में तुझ से तेरे भय को चाहता हूँ और क्रोध और खुशी की हालत में सच्ची बात कहने की शक्ति मांगता हूं और ग़रीबी और अमीरी में मध्यम मार्ग को धारण करने की और तेरे चेहरे पर पड़ने नज़र के आनन्द को और तेरी मुलाकात का शौक तुझ से मांगता हूं और मैं किसी कष्ट देने वाले मामले और पथ भ्रष्ट करने वाले फित्ने से तेरी पनाह में आता हूं। हे अल्लाह हमें ईमान की सुन्दरता के साथ सम्मानित कर दे। और हमें हिदायत पाने वाले लोगों के लिए मार्ग दर्शक बना दे।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 6 पृष्ठ 262 हदीस अम्मार बिन यासिर हदीस 18515 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

यह भी रिवायत में भी आता है कि हज़रत अम्मार बिन यासिर हर शुक्रवार को सूरह अल-यासीन की तिलावत किया करते थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 193 अम्मार बिन यासिर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 1990 ई)

हारिस बिन सोहेल का कहना है कि एक व्यक्ति ने हज़रत उमर के पास हज़रत अम्मार की चुग़ली की, शिकायत की थी। हज़रत अम्मार तक यह बात पहुंची तो आप ने अपने हाथ दुआ के लिए उठाए और कहा ऐ अल्लाह अगर उस व्यक्ति ने मुझ पर झूठ बोला है तो उसे दुनिया में सुविधा दे और उसकी अख़रत लपेट दे।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 194 अम्मार बिन यासिर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 1990 ई)

अबू नोफल बिन अकरब कहते हैं कि हज़रत अम्मार बिन यासिर सब से अधिक चुप रहने वाले और सबसे कम बातें करने वाले थे वह कहा करते थे कि मैं उपद्रव से अल्लाह तआला की पनाह मांगता हूँ मैं फित्नों से अल्लाह तआला की पनाह मांगता हूं।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 194 अम्मार बिन यासिर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 1990 ई)

खसीमह बिन अबी सबरह कहते हैं कि मैं मदीना आया और अल्लाह तआला से दुआ की कि मुझे किसी नेक आदमी की संगत मिल जाए तो अल्लाह तआला मुझे हज़रत अबू हुरैरह की संगत उपलब्ध करा दी। हज़रत अबू हुरैरह ने मुझ से पूछा तुम किन लोगों में से हो? मैंने कहा कि मेरा सम्बन्ध कूफा की धरती से है। मैं ज्ञान और भलाई के लिए हाज़िर हुआ हूं। हज़रत अबु हुरैरा ने कहा कि क्या तुम्हारे यहाँ जिस की दुआएं स्वीकार होती हों हज़रत साद बिन अबी वक़ास, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पानी और जूते उठाने वाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के राज़ जानने वाले हज़रत हज़ीफह बन यमानी और अम्मार बन यासिर जिनके बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़बान से यह फरमान जारी हुआ था कि अल्लाह तआला ने उन्हें शैतान से पनाह दे रखी है और दो किताबों इंजील और कुरआन का ज्ञान रखने वाले हज़रत सलमान मौजूद नहीं।?

(अल्मुस्तदरक अलस्सहीहैन जिल्द 3 पृष्ठ 481 किताब मअरूफा अस्सहाबा ज़िक्र मनाकिब अम्मार बिन यासिर हदीस 5726 प्रकाशन दारुल हरमैन लित्तबाअत वन्नशर वत्तऔज़ीअ 1997 ई) आप ने यह बात वर्णन की कि जब ये लोग हैं, तो तुम उनसे लाभ क्यों नहीं उठाया

मुहम्मद बिन अली बिन हनफ़िया बताते हैं कि हज़रत अम्मार बन यासिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए उस समय आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बीमार थे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अम्मार से कहा मैं तुम्हें वह दम सिखाओं जो जिब्राईल ने मुझ पर किया है हज़रत अम्मार कहते हैं कि मैंने कहा, जी हां हे अल्लाह के रसूल ! कहते हैं कि तब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें यह दम सिखाया कि

بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ وَاللّٰهُ يَشْفِيْكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يُّؤْذِيْكَ كَه

कि अल्लाह तआला के नाम से शुरू करके तुम्हें दम करता हूँ और अल्लाह तुम्हें हर उस बीमारी से चंगा कर दे जो तुम्हें कष्ट दे तुम उसे पकड़ लो और खुश हो जाओ।

(अल्मुस्तदरक अलस्सहीहैन जिल्द 3 पृष्ठ 481-482 किताब मअरूफा अस्सहाबा ज़िक्र मनाकिब अम्मार बिन यासिर हदीस 5726 प्रकाशन दारुल हरमैन लित्तबाअत वन्नशर वत्तऔज़ीअ 1997 ई)

हज़रत अनस से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जन्नत हज़रत अली और हज़रत अम्मार और हज़रत सलमान और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहो अन्हुम की अभिलाषा कर रही है।

(अल्इस्तिआब जिल्द 3 पृष्ठ 1138 अम्मार बिन यासिर प्रकाशन दारुल जैल बैरूत 1992 ई)

हज़रत हुज़ैफा रज़ि अल्लाह तआला अन्हो से वर्णन है कि हम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे कि आप ने फरमाया "मुझे नहीं पता कि मैं तुम्हारे बीच कितनी देर तक रहूंगा। अत: तुम मेरे बाद उन लोगों की इक्तेदा करना आप ने अबू बकर और उमर की ओर इशारा किया और अम्मार के मार्ग को अपनाना और जो तुम्हें इब्ने मसूद वर्णन करें उनकी पुष्टि करनी।

(सुनन अत्तिरमज़ी अबवाबुवल मनाकिब बाब मनाकिब अम्मार बिन यासिर हदीस 3799)

हज़रत अम्मार के संबंध से ही उल्लेख हुआ था पिछले सप्ताह में कि हज़रत अम्मार मफसेदीन के धोखा में आ गए थे। जब हज़रत उसमान ने उन्हें गवर्नर की तहकीक करने के लिए भेजा था तो आप मफसेदीन के समूह के पास चले गए और पूरी तरह अनुसंधान नहीं हुआ तो इस बात का वर्णन करते हुए हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह ने एक जगह लिखा है कहा है कि हज़रत उस्मान के विरुद्ध जो फसाद हुआ और ख़िलाफत के ख़िलाफ जो सारी बातें पैदा हुईं इस कारण उत्पन्न हुई कि उन लोगों का प्रशिक्षण सही नहीं था वह बहुत कम केंद्र में आया करते थे और कुरआन के ज्ञान को बहुत कम जानते थे। उन्हें धर्म का बहुत कम ज्ञान था, इसलिए आप ने उस समय आप ने जमाअत को हिदायत की कि इस बात से तुम लोगों को नसीहत पकड़नी चाहिए इसलिए एक तो यह कि कुरआन का ज्ञान

सीखो केंद्र से हमेशा संपर्क रखें और धर्म का ज्ञान सीखने ताकि यदि भविष्य में भी किसी भी प्रकार का अगर कोई फित्ना जमाअत में उठता है तो तुम लोग हमेशा उस से बच सको

(उद्धरित अन्वारे ख़िलाफत अंवारुल उलूम जिल्द 3 पृष्ठ 171)

अत: इसलिए इस बात को हमें हमेशा याद रखना चाहिए। हर कोई न तो केंद्र में आ सकता है और इस तरह ख़िलाफत के साथ निजी संबंध स्थापित नहीं हो सकता लेकिन एक बात बहरहाल है कि धर्म का ज्ञान सीखना, कुरआन का ज्ञान सीखना यह तो अब प्रत्येक के लिए उपलब्ध और फायदेमंद है, और अल्लाह तआला ने इस युग में हमें एम.टी के माध्यम से ऐसा माध्यम प्रदान कि है जिसके माध्यम से हम अगर चाहें तो धर्म का ज्ञान सीख सकते हैं कुरआन के दर्स इस में होते हैं हदीस के दर्स होते हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों के दर्स होते हैं ख़ुत्बे हैं दूसरे ख़त्बे हैं। जलसे हैं तो कम से कम तदनुसार अगर हम अपने आप को भी और अपनी नस्लों को भी इस माध्यम से जोड़ लें तो यह प्रशिक्षण का एक बहुत अच्छा माध्यम है ख़िलाफत से संबंध स्थापित होता है और हर प्रकार के उपद्रव और शरारत से बचाने वाला भी है और धार्मिक ज्ञान में भी वृद्धि कराने वाला है इस लिए इस तरफ जमाअत के लोगों को बहुत ध्यान देना चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो एम टी ए का माध्यम प्रदान किया है इस से अपने आप को जोड़ें।

हज़रत अबू लूबाबह बिन अब्दे मुन्ज़िर एक और सहाबी हैं इन के बारे में कुछ वर्णन करूंगा। हज़रत अबू लुबाबा के नाम के बारे में कुछ मतभेद है कुछ इन का नाम बशीर बताते हैं। और इब्ने इस्हाक के निकट इन का नाम रफाअ है अल्लामा ज़महशरी के निकट इन का नाम मरवान है। बहरहाल यह अन्सार के कबीला औस से सम्बन्ध रखते थे और बारह नकीबों में से थे और बैअत उक्बा में शामिल थे।

जंग बदर के अवसर पर मदीना से निकलते हुए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने पीछे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतोम को मदीना का अमीर निर्धारित किया लेकिन जब आप रोहा स्थान के पास पहुंचे जो मदीना से 36 मील की दूरी पर है तो शायद इस विचार से कि अब्दुल्लाह एक नेत्रहीन व्यक्ति है और लश्कर क़ुरैश के आने की ख़बर की मांग है कि आपके पीछे मदीना की व्यवस्था भी मज़बूत रहे आपने हज़रत अबू लुबाबा बिन मुनज़र को मदीना का अमीर निर्धारित करके वापस भिजवा दिया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम के बारे में आदेश दिया कि वह नमाज़ के इमाम रहें परन्तु हज़रत अबू लुबाबा प्रशासनिक कार्य करें। (उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 354) बहरहाल इस तरह यह आधे रास्ते से वापस चले गए।

इब्ने इस्हाक कहते हैं कि "आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़नीमत में इन क भाग भी निर्धारित किया।"

(अल्असाबा फी तमीज़ अस्सहाबा जिल्द 7 पृष्ठ 290 अबुलल मुन्ज़िर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 1995 ई)

जंग बदर के अवसर पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अली और हज़रत अबू लुबाबह तीनों बारी बारी ऊंट पर सवार होते थे। हज़रत अली और हज़रत अबू लुबाबह ने बड़े ज़ोर से निवेदन किया कि हम पैदल चलते हैं और हुज़ूर सवार रहें लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न माना और मुस्कुराते हुए फरमाया कि आप दोनों चलने मुझ से अधिक शक्तिशाली नहीं और न ही मैं तुम दोनों से प्रतिफल के बारे में बे-नयाज़ हूँ।

(उद्धरित सीरत ख़ात्मुन्निबय्यीन लेखक साहिबज़ाद हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 353) (अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 2 पृष्ठ 15-16 जंग बदर दारुल अहया अत्तुरास अल्अरबी बैरूत 1990 ई)

जंग बदर के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारसा को मदीना वालों को सुसमाचार पहुंचाने के लिए रवाना किया हज़रत ज़ैद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊँटनी पर आए थे जब वह मुसली (एक स्थान) पर पहुंचे आपने सवारी से ज़ोर से कहा कि रबीया के दोनों बेटे उतबह और शैयबह, हुज्जाज के बेटे अबूजहल और अबुलबख़तरी, ज़मअ बिन असवद, उमय्या बिन ख़लफ़ ये सब मारे गए हैं और सुहैल बिन अमरो और कई बंदी बना लिए गए हैं लोग ज़ैद बिन हारसा की बात पर विश्वास नहीं कर रहे थे और कह रहे थे कि ज़ैद हार कर लौटे हैं और इस बात ने मुसलमानों को क्रोध में डाल दिया(मुनाफेकीन और विरोधी जो थे वे कहा करते थे) और वे डर भी गए थे, इसलिए वे इस प्रकार की बात कर रहे थे। मुनाफेकीन में से एक व्यक्ति ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद से कहा कि तुम्हारे आक़ा और उनके साथ जो गए थे वे सब मारे जा चुके हैं एक व्यक्ति ने हज़रत अबू लुबाबह से कहा कि तुम्हारे साथी अब इस तरह बिखर चुके हैं कि फिर कभी दोबारा इकट्ठे नहीं हो सकते और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के बड़े-बड़े सहाबा शहीद हो गए हैं और यह आपकी ऊंटनी है और हम इसे जानते हैं। विरोधी कहने लगे कि ज़ैद तो भय के कारण इसे ख़ुद ही पता नहीं कि क्या कह रहा है और हार कर लौटा है। हज़रत अबू लुबाबा ने कहा अल्लाह तआला तुम्हारी बात को रद्द करेगा। यहूदी भी यही कहते थे कि ज़ैद विफल और नामुराद और हार कर लौटा है। हज़रत उसामा बिन ज़ैद कहते हैं कि मैंने अपने पिता से एकान्त में पूछा कि हे अब्बा आप जो कहते हैं क्या यह सच है हज़रत ज़ैद ने कहा, मेरे बेटे, अल्लाह की कसम, मैं जो कह रहा हूं वह सच है हज़रत उसामा कहते हैं कि इस से मेरा दिल मज़बूत हो गया।

(किताबुल मुग़ाज़ी जिल्द 1 पृष्ठ 114 बदरुल किताल प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 2004 ई)

हज़रत अबू लुबाबह की सादगी और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर फिदा होने की घटना का उल्लेख इस तरह हुआ है कि 5 हिजरी में जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग ख़ंदक को ख़त्म कर के शहर में वापस आए तो अभी आप ने मुश्किल से हथियार आदि उतार कर नहाना धोना समाप्त ही किया था कि आपको अल्लाह तआला की तरफ से कश्फ के माध्यम से बताया गया कि जब तक बनू करीज़ा की ग़द्दारी और विद्रोह का निर्णय नहीं लिया जाता है, तब तक आपको हथियार नहीं उतारने चाहिए। आपने सहाबा में घोषणा कर दी कि सभी लोगों को बनू कुरीज़ा के किलों की तरफ रवाना हो जाएं। और नमाज़ असर वहां पहुंच कर ही अदा की जाएगी। आरम्भ में तो यहूदी लोग बहुत अंहकार और गर्व जताते रहे लेकिन ज्यों-ज्यों समय बीतता गया उन्हें घेराबंदी की सख्ती और अपनी बेबसी का एहसास होना शुरू हुआ (कि मुसलमानों ने उनके किले को घेर लिया था) और अंत में उन्होंने आपस में सलाह है कि अब क्या करना चाहिए (बहरहाल) उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि किसी ऐसे मुसलमान को जो उनसे संबंध रखता हो और अपनी सादगी की वजह से उनके दांव में आ सकता है अपने किले में बुलाएं और यह पता लगाने की कोशिश करें कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उन के बारे में क्या इरादा है ताकि वे उस की रौशनी में अपने लिए मार्ग बना सकें अत: उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक दूत रवाना किया कि और यह अनुरोध किया कि अबू लुबाबह बिन मुंज़िर अंसारी को उनके किला में भिजवाया जाए ताकि वे इससे सलाह कर सकें आप ने अबू लुबाबा को अनुमति दे दी और वह उनके किले में चले गए। अब बनो क़ुरीज़ा के अमीरों ने यह प्रस्ताव किया था कि जैसे ही अबू लुबाबा ने किले के अंदर प्रवेश कर सभी यहूदी औरतें और बच्चे रोते चिल्लाते उनके आसपास जमा हो जाएं और अपनी परेशानी और असुविधा का उनके दिल पर पूरा पूरा प्रभाव पैदा करने की कोशिश की जाए। अत: अबू लुबाबह पर यह दांव चल गया और बनो कुरीज़ा के प्रश्न करने पर कि हे अबू लुबाबह तो हमारा क्या हाल देख रहा है क्या हम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निर्णय पर अपने किले से उतर आएं। अबू लुबाबह ने उत्तर दिया, हाँ उतर आओ। परन्तु साथ ही अपने गले पर हाथ फेर कर इशरा किया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे कत्ल का आदेश देंगे। हज़रत अबू लुबाबह कहते हैं कि जब यह विचार आया कि मैंने ख़ुदा और उस के रसूल से ख़यानत की है(जो इशारा किया है ग़लत तरीके से कर दिया है) तो मेरे पैर लड़खड़ाने लगे। आप वहां से मस्जिद नबवी में आए और मस्जिद के एक खंभे से अपने आप को बांध दिया (कि यह मेरी सज़ा है) और कहा कि जब तक ख़ुदा तआला मेरी तौबा स्वीकार न करेगा इसी तरह बंधा रहूंगा हज़रत अबू लुबाबह कहते हैं कि मेरे बनो क़रीज़ा जाने और जो कुछ मैंने वहाँ किया है इस की खबर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंची तो आपने फ़रमाया इसे छोड़ दो यहाँ तक कि ख़ुदा तआला उसके बारे में जो चाहेगा करेगा अगर वह मेरे पास आता तो मैं उसके लिए क्षमा मांगता जब वह नहीं आया और चला गया है, तो उसे जाने दो। हज़रत अबू लुबाबह कहते हैं, मैं पंद्रह दिन इस परीक्षा में रहा, आप कहते हैं कि मैंने एक सपना देखा था और मुझे याद आया कि

मैंने सपना देखा है कि हम ने बनू कुरीज़ा का घेराव किया है और मैं एक बदबूदार मिट्टी में घिरा हुआ हूँ, मैं इससे बाहर नहीं निकल सकता हूं और करीब था कि मैं इस से हलाक हो जाता। तभी मैंने एक नहर देखा जो बह रहा था तब मैंने देखा कि मैं इसमें स्नान कर रहा था, भले ही मैं खुद साफ हो गया और फिर मैं अपने आप को साफ महसूस कर रहा था। आप हज़रत अबू बकर के पास इस के अर्त पूछने गए तो आप ने फरमाया तुम्हें इस प्रकार का मामला पहुंचेगा जिस के कारण तुम्हें दुख: पहुंचेगा। फिर तुम्हें इस से मुक्ति दी जाएगी। हज़रत अबू लुबाबह कहते हैं कि मैं बंधा हुआ हज़रत अबू बकर की बात को याद करता था और आशा करता था कि मेरी तौबा स्वीकार की जाएगी। हज़रत उम्मे सलमा कहती हैं कि हज़रत अबू लुबाबह की तौब: के स्वीकार होने की वह्यी मेरे घर नाज़िल हुई कहती हैं मैं ने सहरी के समय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हंसते हुए देखा। मैंने निवेदन किया कि अल्लाह आप को हमेशा मुस्कुराता रखे आप किस बात पर हंस रहे हैं।? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हज़रत अबू लुबाबह की तौब: स्वीकार हो गई । मैंने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल क्या मैं उन को सूचित कर दूं। आप ने फरमाया अगर तुम चाहती हो तो कर दो। हज़रत उम्मे सलमा कहती हैं कि मैंने कमरा के दरवाज़ा पर खड़े होकर कहा (यह पर्दा के आदेश नाज़िल होने से पहले की बात है) हे अबू लुबाबह खुश हो जाओ। अल्लाह ने आप पर फज़ल करते हुए आप की तौब: स्वीकार कर ली। लोग दौड़ कर अबू लुबाबह को खोलने लगे परन्तु उन्होंने कहा नहीं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही मुझे खोलें। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फजर की नमाज़ पढ़ने के लिए पधारे तो अपने मुबारक हाथों से आप को खोला। हज़रत अबू लुबाबह ने कहा कि मैं अपने घर को जहां मुझ से यह गुनाह हुआ छोड़ता हूं यह बहुत बड़ी ग़लत बात मुझ से हो गई है इस लिए मैं अपना घर छोड़ता हूं और मैं अपने माल को अल्लाह और रसूल के मार्ग में सदका करता हूं। आप ने फरमाया केवल एक तिहाई माल का सदका करो। हज़रत अबू लुबाबह ने एक तिहाई माल का सदका किया और अपना पुशतैनी घर छोड़ दिया।

(उद्धिरत सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 597-599)(असदुल ग़ाबा जिल्द 6 पृष्ठ 216-262 अबुलबाब: प्रकाशन दारुल कुतुब अल्मिया बैरूत किताबुल मग़ाज़ी जिल्द 2 पृष्ठ 11-12 जंग बनी कुरैज़ा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 2004 ई)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने इस विस्तार के अलावा भी विस्तार वर्णन किया है आप फरमाते हैं कि बनो क़रीज़ा का मामला तय होने वाला था उनका देशद्रोह ऐसा नहीं थी कि अनदेखी की जाती। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वापस आते ही अपने साथियों से कहा कि घरों में आराम न करो बल्कि शाम से पहले पहले बनो क़ुरीज़ा के किलों तक पहुंच जाओ और फिर आप ने हज़रत अली को बनो क़ुरीज़ा के पास भिजवाया कि वह उनसे पूछें कि उन्होंने समझौता के ख़िलाफ देशद्रोह क्यों है।(बीच में छोड़ कर चले गए थे)। बजाए इसके के बनो कुरीज़ा शर्मिंदा होते या क्षमा मांगते या कोई बात करते, उन्होंने हज़रत अली और उनके साथियों को बुरा भला कहना शुरू कर दिया और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके परिवार की औरतों को गलियां देना शुरू कर दीं, और कहा कि हम नहीं करते। हम जानते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या चीज़ हैं हमारा उन के साथ साथ कोई समझौता नहीं हुआ है। हज़रत अली उन का यह सन्देश लेकर जा रहे थे कि इतने में देखा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सहाबा के साथ यहूद के किले की तरफ जा रहे थे। चूंकि यहूद गन्दी गालियां दे रहे थे और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बावियों और बेटियों को बुरा भला कह रहे थे। हज़रत अली ने इस विचार से के इस से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कष्ट होगा निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल आप क्यों कष्ट करते हैं हम लोग इस लड़ाई के लिए काफी हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "मैं समझता हूं कि वे गालियां दे रहे हैं और तुम नहीं चाहते कि वे मेरे कानों में आएं । हज़रत अली ने कहा: हाँ, रसूलुल्लाह बात तो यही है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया फिर क्या हुआ अगर वे गालियां देते हैं मूसा नबी तो उनका अपना था उन्हें इससे भी अधिक उन्होंने कष्ट दिए थे। यह कहते हुए आप यहूदियों के किले की ओर चले गए मगर यहूदियों ने दरवाजे बंद कर लिए और किला बंद हो गए और मुसलमानों के साथ लड़ना शुरू कर दिया, यहां तक कि उनकी महिलाएं भी लड़ने में शामिल थीं, साथ ही कि कुछ मुसलमान किले की दीवार के नीचे बैठे थे, कि एक यहूदी महिला ने ऊपर से पत्थर फेंक कर एक मुसलमान की हत्या कर दी। परन्तु कुछ दिन की घेरा बन्दी के बाद यहूदियों को एहसास हुआ कि वे एक लंबी लड़ाई नहीं कर सकते, फिर उन के सरदारों ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इच्छा है कि वे अबू लुबाबह अंसारी को जो उनके दोस्त औस कबीले के सरदार थे उनके पास भिजवाएँ ताकि वह उनसे सलाह कर सकें। आपने अबू लुबाबाह को भेजा, उन से यहूद ने यह मश्वरा पूछा कि क्याा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कि फैसला मेरे सुपुर्द करते हो तुम हथियार फेंक दो हम स्वीकार कर लें? अबू लुबाबा ने मुहं से तो कुछ ने कहा परन्तु अपने गले पर इस प्रकार हाथ फेरा जिस प्रकार कत्ल की निशानी है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस समय तक अपना कोई फैसला प्रकट नहीं किया था परन्तु अबू लुबाबह ने अपने दिल में यह समझते हुए कि उनके अपराध की सजा सिवाय कत्ल के और क्या होगी बिना सोचे समझे इशारे के साथ उनसे एक बात कह दी जो अन्त में उन के विनाश का कार हुई। अत: यहूद ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सुलह करने से इनकार कर दिया। अगर वे अल्लाह तआला के रसूल से निर्णय लेते हैं, तो उन्हें अन्य यहूदी कबीलों की तरह अधिक से अधिक यही दंड दिया जाता कि उन्हें मदीना से निकाला जाता, लेकिन वे दुर्भाग्यपूर्ण थे कि उन्होंने कहा कि हम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फैसला मानने के लिए तैयार नहीं बल्कि हम अपने सहयोगी जनजाति औस के सरदार साद बिन मुआज़ का फैसला मानेंगे जो निर्णय वह करेंगे हमें मंजूर होगा लेकिन इस समय यहूद में मतभेद हो गया यहूद में से कुछ ने कहा कि हमारी क़ौम ने राजद्रोह किया गया है और मुसलमानों का व्यवहार साबित करता है कि उनका धर्म सत्य है, लोग अपना धर्म त्याग कर इस्लाम में शामिल हो गए और इस्लाम में प्रवेश करते हैं। एक व्यक्ति अम्रो बिन सादी ने जो अपनी कौम के प्रमुखों से था अपनी क़ौम को मलामत की और कहा कि तुम ने देशद्रोह किया है अनुबंध को तोड़ा है अब या तो मुसलमान हो जाओ या जज़िया पर राज़ी हो जाओ। यहूदियों ने कहा, वे मुस्लिम नहीं होंगे, न ही वे जज़िया देंगे उस से मरना बेहतर है। तब उसने उनसे कहा, मैं तुम्हारे लिए क्षमा चाहता हूं, और कहा मैं किले से बाहर आया और बाहर चला गया। जब वह किले से बाहर निकला तो मुसलमानों के एक दल ने, जिसका सरदार मुहम्मद बिन मुस्लिम था, उस देख लिया और उससे पूछा कि वह कौन है।? उस ने कहा कि मैं अमुक हूं। इस पर मुहम्मद बिन मुस्लिम ने कहा,

اَللّٰھُمَّ لَا تَحْرِمْنِیْ اِقَالَۃَ عَثَرَاتِ الْکِرَامِ

अर्थात अपनी सलामती से चले जाएं और फिर अल्लाह तआला से दुआ की कि इलाही मुझे शरीफों की ग़लतियों पर पर्दा डालने के नेक काम से कभी वंचित न रखे। यानी यह व्यक्ति क्योंकि अपने कार्य और अपनी क़ौम के कर्म पर पछताता है तो हमारा भी नैतिक कर्तव्य है कि उसे माफ कर दें इसलिए मैंने उसे गिरफ्तार नहीं किया और जाने दिया ख़ुदा तआला मुझे हमेशा ऐसे ही नेक कामों की तौफ़ीक़ देता रहे। जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस घटना की जानकारी हुई तो आप मुहम्मद बिन मुस्लिमा को डांटा नहीं कि क्यों इस यहूदी को छोड़ दिया बल्कि इस कर्म की सराहना की।

(उद्धरित दीबाचा तफसीरुल कुरआन अनवारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 282-284)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में जो कहा जाता है कि आपने अत्याचार किए और और यहूदी जनजातियों को मार डाला तो यह तो स्वयं विनाश के जिम्मेदार थे जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फैसला करवाने के

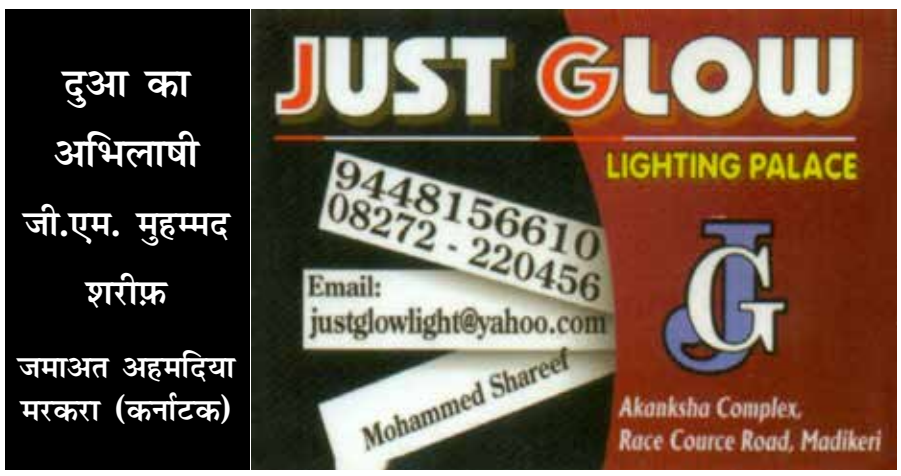

बजाय उन्होंने अपने एक सरदार अन्य जनजाति के सरदार को जो मुसलमान हो गए उन्होंने इसे करने का फैसला किया और फिर उनकी पुस्तक के अनुसार यह निर्णय दिया गया लेकिन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कोई दोष नहीं था और न ही सहाबा पर की उन्होंने कोई अत्याचार किया।

अल्लामा इब्ने साद ने लिखा है एक रिवायत में आता है कि जंग कैनका और जंग सुवैक में भी हज़रत अबू लुबाबह को मदीना में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नियाबत का सौभाग्य मिला है।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 2 पृष्ठ 22 जंग कैनकाअ प्रकाशन दारुल अहया अत्तुरास बैरूत 1990 ई)

हज़रत अबू लुबाबह फतेह मक्का के अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सफर में थे अंसार के गोत्र अम्रो बिन औफ का झंडा उनके हाथ में था। हज़रत अबू लुबाबाह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ युद्धों में शामिल थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 349 व अख़्हुमा अबुल बाब अब्दुल मुन्ज़र प्रकाशन दारुल अहया अत्तुरास बैरूत 1990 ई)

उन की वफात के बारे में कुछ के निकट हज़रत अली के ख़िलाफत के ज़माना में वफात पाए। कुछ कहते हैं हज़रत उसमान की मृत्यु के बाद वफात हुई थी। एक राय यह भी है कि 50 हिजरी के बाद तक जीवित रहे।

(अल्असाबा फी तमीज़ अस्सहाबा जिल्द 7 पृष्ठ 290 अबुलल मुन्ज़िर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 1995 ई)

सईद बिन मुसय्यब रिवायत करते हैं कि हज़रत अबू लुबाबह बिन अब्दुल मुनज़िर कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शुक्रवार के दिन बारिश की दुआ की और कहा

اَللّٰھُمَّ اسْقِنَا۔ اَللّٰھُمَّ اسْقِنَا۔ اَللّٰھُمَّ اسْقِنَا۔

हे अल्लाह ! हम पर बारिश बरसा। हे अल्लाह ! हम पर बारिश बरसा। हे अल्लाह ! हम पर बारिश बरसा। अबू लुबाबह खड़े हुए और कहा हे रसूलल्लाह फल बागों में हैं। रावी कहते हैं कि आकाश में हमें कोई बादल नहीं दिख रहा था आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हे अल्लाह हम पर बारिश बरसा यहां तक कि अबू लुबाबह नंगे बदन अपने खलिहान में अपने कपड़े के साथ पानी के छेद बंद करे। फरमाते हैं कि दुआ के बाद आसमान से पानी बरसना शुरू हो गया बादल आए बारिश शुरू हो गई तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाई। रावी कहते हैं कि अंसार हज़रत अबू लुबाबह के पास आकर कहने लगे कि हे अबू लुबाबह अल्लाह तआला की क़सम यह बारिश तब तक नहीं रुकेगी जब तक आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फरमान के अनुसार नंगे बदन अपने कपड़े द्वारा अपने खलिहान के पानी के निकास का रास्ता नहीं रोक दोगे तो हज़रत अबू लुबाबह ने अपने कपड़े द्वारा निकास का रास्ता बंद करने खड़े हो गए और फिर बारिश बंद हो गई।

(अस्सुनन अल्कुबरा लिल्बहीकी जिल्द 3 पृष्ठ 500 किताब सलातुल इस्तस्का बाबुल इस्तस्का हदीस 6530 प्रकाशन मक्तबा अर्रुशद बैरूत 2004 ई)

हज़रत अबू लुबाबह अपने नवासे अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद को जो (हज़रत उमर के भतीजे थे) एक खजूर की छाल में लपेट कर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा, "हे अबू लुबाबह, तुम्हारे पास क्या है?" अबू लुबाबह ने कहा, "हे अल्लाह तआला के रसूल मेरा नवासा है। मैंने कभी इस तरह का कमज़ोर पैदा होने वाला बच्चा नहीं देखा है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बच्चा को उठाया और उस के सिर पर हाथ फेरा। इस दुआ की बरकत से जब अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद लोगों के साथ पंक्ति में खड़े होते तो कद में सब से लम्बे दिखते थे। हज़रत उमर ने उनकी शादी अपनी बेटी फातिमा से जो हज़रत उम्मे कुलसुम के गर्भ से थीं और हज़रत उम्मे कुलसुम हज़रत अली और हज़रत फातिमा की बेटी थीं।

(इमतआ अल्इस्मा जिल्द 6 पृष्ठ 146 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1999 ई)

हज़रत अनस बिन मलिक ने फरमाया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में से दो आदमियों के घर सबसे दूर थे एक हज़रत अबू लुबाबह बिन अब्दुल मुनज़िर का। उनका घर कब्बा में था और हज़रत अबु अबस बिन जब। यह कबीला बनू हारसा में से थे। वह दोनों असर की नमाज़ आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ पढ़ने के लिए आया करते थे।

(अल्मुस्तदरक अलस्सहीहैन जिल्द 1 पृष्ठ 309 किताब मअरूफा अस्सहाबा ज़िक्र मनाकिब अम्मार बिन यासिर हदीस 5726 प्रकाशन दारुल हरमैन लित्तबाअत वन्नशर वत्तऔज़ीअ 1997 ई)

तो ये इन सहाबा के हालात थे। अल्लाह तआला को उनके स्तर को ऊंचा करता चला जाए।

जुम्अ: की नमाज़ के बाद में दो जनाज़े पढ़ाउंगा। एक जनाज़ा हाज़िर है एक ग़ायब है।

जनाज़ा ग़ायब क़ाज़ी शअबान अहमद साहिब शहीद का है निवासी सराबो गार्डन लाहौर। काज़ी शअबान अहमद सुलैमान खान साहिब पुत्र काज़ी मुहम्मद सुलैमान साहिब को 25 जून 2018 ई को विरोधियों ने उनके घर में घुसकर फायरिंग कर के शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनकी 47 साल उम्र थी। जानकारी के अनुसार 25 जून की रात नकाब पहने हुए दो व्यक्ति घर में प्रवेश हुए। काज़ी साहिब और उनकी पत्नी एक कमरे में थे जबकि उनकी बेटियां दूसरे कमरे में थीं। काज़ी साहिब की पत्नी शौचालय में थीं जब वे बाहर निकलीं तो बाहर दो नकाब पोश लोग मौजूद थे। उन नकाब पोश लोगों में से एक ने काज़ी साहिब की पत्नी के सिर पर पिस्तौल तानी और उन्हें दूसरे कमरे में ले गया जहां उनकी बेटियां मौजूद थीं जबकि दूसरा व्यक्ति काज़ी साहिब के कमरे में ही था उसने तीन गोलियां काज़ी साहिब के पेट में मारें जिन से उसी स्थान पर उनकी शहादत हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। स्वर्गीय शहीद ने 2001 ई में अपने एक दोस्त मोहम्मद इकबाल साहिब के द्वारा घर वालों के साथ बैअत की थी काज़ी साहिब मुजफ्फराबाद कश्मीर के रहने वाले थे। 2001 ई में नश्तर कॉलोनी सरोबा गार्डन लाहौर में शिफ्ट हुए और कुछ समय पहले टाउनशिप लाहौर में भी रहे। वहां काज़ी शाबान साहिब विकलांग बच्चों का स्कूल चला रहे थे और अपने स्कूल के शीर्ष तल पर थे। आज कल घर के निचले भाग में स्कूल का निर्माण कार्य चल रहा था और बंद हो रहा था, इसी स्थान पर यह नकाब पहने हुए लोग पहले से छुप गए थे और फिर अवसर पाकर हमला किया।

शहीद बहुत से गुणों के मालिक थे। बैअत के बाद आदरणीया काज़ी साहिब बहुत ही ईमानदार और नेक व्यक्ति प्राणित हुए। ख़िलाफत से बहुत अधिक प्यार और गहरी प्रतिबद्धता थी। शहीद ने घर पर एम टी ए देखने के लिए डिश एंटीना लगा रखा था ताकि ख़ुद भी और अपने परिवार वालों को ख़िलफत से जोड़े रखें। चन्दों और अन्य वित्तीय कुरबानियों में बढ़ चढ़कर भाग लेते थे। सदर हलका की आमला में वह सचिव समीअ बसरी के रूप में सेवा कर रहे थे, और लोगों की डिश एंटीना भी बिना खर्च के ठीक कर देते थे। काज़ी साहिब की शादी उनके चचेरी बहन से हुई थी। दोनों परिवारों में केवल काज़ी साहिब उनकी पत्नी और बच्चे ही अहमदी थे परिवार के अन्य सदस्य उनके अहमदी होने के कारण विरोधी हो गए कुछ महीने पहले काज़ी साहिब का रिश्तेदार भाई उनके घर आया और कहा कि हमें पता चला है कि आप लोग मिर्ज़ाई हो गए इसी दौरान उसकी नज़र छत पर लगे डिश एंटीना पर पड़ी इसे तोड़ने लगा काज़ी साहिब ने उसे रोका तो आपस में उनकी सख्त बात भी हुई। हालांकि उसके बाद उन के साले ने बाद में अपनी बहन से कहा कि आपका निकाह टूट चुका है, इसलिए मेरे साथ आओ क्योंकि आपका पति मर चुका है। उस पर काज़ी साहिब मरहूम की पत्नी ने अपने भाई से कहा कि मैं ख़ुद भी अहमदी हूँ और मुसलमान हूँ और काज़ी साहिब को भी मुसलमान समझती हूँ मैं तुम्हारे साथ कहीं नहीं जाऊँगी। उनकी पत्नी ने बताया कि शहीद मरहूम को विरोधियों द्वारा धमकी दी जा रही थीं जिनकी वजह से वह काफी परेशान थे और कुछ दिनों से चुप थे और घर से बाहर कम निकलते थे। आदरणीय काज़ी साहिब शहीद ने अपनी पत्नी को भी कहा था कि अगर मुझे कुछ हो गया तो सबसे पहले सदर साहिब क्षेत्र

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

को सूचित करना तो उन्होंने घटना की शहादत के बाद ऐसा ही किया और जमाअत के पदाधिकारियों को सूचना दी और बहुत दृढ़ता दिखाते हुए बावजूद इसके कि उनके ग़ैर जमाअत रिश्तेदार भी आए थे उनकी पत्नी ने कहा कि नमाज़ जनाज़ा और तदफीन भी अहमदी करेंगे। काज़ी साहब के कुछ ग़ैर अहमदी प्रिय व संबंधी मस्जिद नूर में भी आए, लेकिन उन्होंने नमाज़ जनाज़ा नहीं पढ़ी। काज़ी साहिब की पत्नी और बेटियां भी जनाज़ा के साथ कब्रिस्तान में गईं।

शहीद स्वर्गीय ने परिवार में पत्नी शहनाज़ शाबान साहिबा 40 साल उनकी उम्र है और तीन बेटियां आदरणीया किरण 19 साल, सिदरतुल शाबान 18 साल और मलाइका 11 साल छोड़ी हैं। पोलियो के कारण इन तीन बेटियों में कुछ विकलांगताएं भी हैं, अल्लाह तआला स्वयं ही इन सब का ध्यान रखने वाला हो और उन्हें हर कठिनाई से बचाए और काज़ी साहिब के स्तर को बढ़ाए।

दूसरा जनाज़ा जो हाज़िर जनाज़ा है वह सुश्री अमतुल हई बेगम साहिबा पुत्री सेठ मुहम्मद ग़ौस साहिब का है जो 23 जून को सौ साल से ऊपर उम्र में उनकी मृत्यु हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके पिता सेठ मुहम्मद ग़ौस साहिब की दो विशेषताएं हैं। हालांकि वह सहाबी तो नहीं थे लेकिन हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो ने उन्हें बहश्ती मकबरा कादियान में सहाबा के क्षेत्र में दफन करने की अनुमति दी थी।(तारीखे अहमदियत जिल्द 4 पृष्ठ 211)

दूसरी विशेषता उनकी था कि किताब असहाबे अहमद में लिखा है कि सेठ मुहम्मद ग़ौस पिछले 42 साल से वह पहले भाग्यशाली व्यक्ति हैं जिनका नमाज़े जनाज़ा आज ठीक उसी जगह और उसी स्थान पर पढ़ा जा रहा है जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पवित्र शरीर रखा गया था इस अवसर पर हज़रत शेख याकूब अली साहिब इर्फानी ने एक स्टूल या कुर्सी पर खड़े होकर ऊंची आवाज़ में इस की गवाही भी दी।

(असहाबे अहमद भाग 9 पृष्ठ 268-269 सीरत भाई अब्दुर्रहमान साहिब कादियानी)

अमतुल हई साहिबा के निकाह के वक्त यद्यपि आप के पिता मौजूद थे मगर हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो उनके पिता की इच्छा पर ही उनके अभिभावक बने और निकाह पढ़ाया और अपने खुत्बा में फरमाया कि सेठ साहब की छोटी लड़की अमतुल हई के निकाह की घोषणा मैं इस समय कर रहा हूँ जो खान डॉक्टर मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब के करीबी प्रिय और शायद भांजे मुहम्मद यूनुस साहब के साथ करार पाया है इस रिश्ते में भी सेठ साहब ने नेकी ध्यान में रखी है। सभ्यता के मतभेद के कारण मैंने उन्हें लिखा था कि हैदराबाद में रिश्ता करें लेकिन उनकी इच्छा थी कि कादियान या पंजाब में रिश्ता हो ताकि कादियान आने के लिए एक और तहरीक उनके लिए पैदा हो जाए। मुहम्मद यूनस ज़िला करनाल का निवासी है, जो दिल्ली के साथ रगता है लेकिन हैदराबाद की तुलना में कदियान के करीब है। सेठ साहब का परिवार एक श्रद्धावान परिवार है उनकी औरतों का हमारे परिवार की औरतों , उनकी लड़कियां मेरी लड़कियों और उनके और उनके और उन के लड़कों के मेरे साथ ऐसे ईमानदार संबंध हैं कि मानो एक घर वाला वाला मामला है हम उनसे और वे हम से नि:संकोच हैं और एक-दूसरे के ख़ुशी और दु:ख को इस प्रकार अनुभव करते हैं जैसे अपने ख़ानदान की शादी और ख़ुशी महसूस करते हैं। उसकी लड़की अमतुल हई का निकाह एक हज़ार रुपया मेहर पर मुहम्मद यूनुस साहिब पुत्र अब्दुल अज़ीज़ निवासी लाडवा ज़िला करनाल के साथ करार पाया। ख़लीफा सानी ने फरमाया कि सेठ ने मुझे लड़की की तरफ से अभिभावक बनाया है।

अमतुल हई साहिबा नमाज़ रोज़ा की पाबनंद, ख़िलाफत की इताअत करने वाली, बहुत श्रद्धा रखने वाली थीं। मुझे भी मिलने आया करती थीं। बावजूद बुढ़ापे के यहां आया करती थीं। और बहुत श्रद्धा को प्रकट करती थीं। बहुत नेक और सालहि औरत थीं। मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में दो बेटियां और दो बेटे और बड़ी संख्या में पोते पोतियां और नवासे नवासियां छोड़े हैं। आप मुहम्मद इदरीस साहिब हैदराबादी (आफ जर्मनी) की माता थीं। उन के एक पोते मुसव्विर अहमद साहिब यहां भी हैं। ख़ुद्दामुल अहमदिया में काम करते हैं।

अल्लाह तआला उन के स्तर ऊंचा करे और उन की नस्लों को भी ख़िलाफत से सच्चा और वास्तविक सम्बन्ध रखने की तौफीक प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

नहीं आई, या यह कहेगा कि मुझे उसने अपनी वाणी से गौरवान्वित किया है जबकि नहीं किया, तो मैं ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों को साक्षी रखकर कहता हूं कि उसका विनाश किया जाएगा क्योंकि उसने अपने जन्मदाता पर झूठ बांधा और मक्कारी और अहंकार प्रकट किया। अत: तुम इस स्थिति से डरो । लानत है उन लोगों पर जो झूठे स्वप्न बनाते हैं और झूठे तौर पर दावा करते हैं-कि ख़ुदा ने हमें अपनी वाणी और आदेशों से गौरवान्वित किया है। दूसरे शब्दों में उनका विचार है कि ख़ुदा का अस्तित्व नहीं, पर ख़ुदा का प्रकोप उन पर आएगा । उनका बुरा दिन उनसे टल नहीं सकता। अत: तुम सत्य, शालीनता और संयम से क्षमायाचना करो, ख़ुदा के प्रेम में उन्नति करो और जीवन पर्यन्त अपना कर्तव्य यही समझो, फिर ख़ुदा तुम में से जिसको चाहेगा अपनी वाणी और वार्तालाप से गौरवान्वित करेगा । तुम्हारी ऐसी आकांक्षा भी नहीं होनी चाहिए कि परिणाम स्वरूप तामसिक आवेग जन्म लेने लगें जिससे अनेकों लोग नष्ट हो जाते हैं। अत: तुम सेवा और उपासना में लगे रहो। तुम्हारे समस्त प्रयास ख़ुदा के आदेशों का पालन करने में व्यस्त रहें। मुक्ति की प्राप्ति हेतु विश्वास और श्रृद्धा में उन्नति करो न कि ख़ुदा की वाणी के प्रदर्शन हेतु ।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 26 से 28)

हाशिया।

दूसरा माध्यम हिदायत का सुन्नत है अर्थात वह पाक नमूने जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने पवित्र नेक नमूनों से दिखाए जैसे नमाज़ पढ़ कर दिखलाई कि इस प्रकार पढ़नी चाहिए और रोज़ा रख कर दिखाया कि इस प्रकार रखो इसी का नाम नबी की सुन्नत है अर्थात नबी के कार्य अर्थात ख़ुदा के कथन को व्यवहार के रंग में दिखलाते रहे इस की नाम सुन्नत है। तीसरा माध्यम हिदायत का हदीस है जो आप के बाद आप के कथन जमा किए गए और हदीस का स्तर कुरआन तथा सुन्नत से कम है क्योंकि प्राय हदीसे ज़न्नी हैं परन्तु यदि इस से साथ सुन्नत हो तो इसे विश्वास के स्तर पर ले जाएगी।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

प्यार और मुहब्बत से रहना। यदि तुम आपस में अपने रिश्ते के भाइयों से लड़ाई करते हो तो यह सिला रहमी नहीं है सिला रहमी यह है कि तुम आपस में भाई, चचेरे भाई, रिश्तेदार सारे एक दूसरे का ध्यान रखो।

इस के बाद प्रिय मुग़ीत अहमद ने मल्फ़ूज़ात से हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उद्धरण प्रस्तुत किया।

"नमाज़ ख़ुदा का हक है इसे अदा करो अगर सारा घर नष्ट होता है तो हो जाने दो परन्तु नमाज़ को तर्क न करो वे काफिर और मुनाफिक हैं जो नमाज़ को मन्हूस कहते हैं और कहा करते हैं कि नमाज़ के शुरु करने से हमारा अमुक नुकसान हुआ है नमाज़ कदापि अल्लाह के क्रोध का माध्यम नहीं। जो इसे मन्हूस कहते हैं उन के अन्दर स्वयं ज़हर है जैसे बीमार को मीठा कड़वा लगता है वैसे ही उन को नमाज़ में मज़ा नहीं आता यह धर्म को ठीक करती है और दुनिया को ठीक करती है। नमाज़ का आन्नद दुनिया के प्रत्येक आन्नद पर विजयी है शारीरिक आन्नद का लिए हज़ारों खर्च करते हैं और फिर उन का परिणाम बीमारियां होती हैं और यह मुफ्त की जन्नत है जो उस को मिलती है। कुरआन शरीफ में जो जन्नतों का वर्णन है उन में से एक दुनिया की जन्नत है और वह नमाज़ है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 3, पृष्ठ 591,592, संस्करण 2003, भारत)

इसके बाद प्रिय फ़राज़ अहमद ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंज़ूम कलाम

कभी नुसरत नहीं मिलती दरे मौला से गंदों को
कभी ज़ाय नहीं करता वह अपने नेक बंदों को

अच्छी आवाज़ में पढ़ कर सुनाई।

इस के बाद प्रिय मुदस्सिर अहमद ने डेनमार्क के बारे में एक सूचनात्मक लेख प्रस्तुत किया। इस के बाद प्रिय शामीक अहमद ने "मस्जिद नुसरत जहां" के विषय पर तकरीर की।

अज़ीज़ ने अपने भाषण में मस्जिद के उद्घाटन के लिए हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस 20 जुलाई 1967 ई ट्रेन के माध्यम से कोपेने हेग्न पधारे।

इस पर हुज़ूर ने फरमाया कि यह उल्लेख नहीं किया गया है कि ट्रेन कहां से आई थी। इस पर हुज़ूर अनवर की सेवा में कहा गया था कि हैम्बर्ग (जर्मनी) ने डेनमार्क में ट्रेन पधारे थे। जर्मनी से डेनमार्क आते हुए रास्ता में समुन्द्र है और ट्रेने पूर्ण रूप से फेरी पर बोर्ड होती है और दूसरी ओर, यह अपने ट्रैक पर आता है।

इस के बाद मस्जिद "मस्जिद नुसरत जहां के आधारशिला की वीडियो दिखाई गई। इस में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद साहिब को नींव रखते हुए दिखाया गया था। यह नींव 6 मई, 1966 ई को रखी गई थी। इस वीडियो में, हज़रत चौधरी सर मुहम्मद ज़फरुल्लाह खान को नमाज़ की इमामत करते हुए दिखाया गया है।

तब प्रिय शीराज़ अहमद ने पंजाबी भाषा में स्वागत की नज़म पढ़ी।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने बच्चों को सवाल पूछने की अनुमति दी।

***एक बच्चा ने सवाल किया कि जब हम अपनी नमाज़ पढ़ रहे हों और अभी पूरा न की हो और नमाज़ का हिस्सा बाकी रहता है, इस दौरान इमाम जमाअत के साथ नमाज़ शुरू करवा दिया तो हमें क्या करना चाहिए।**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: फ़र्ज़ नमाज़ अधिक महत्त्वपूर्ण है। जब तुम सुन्नतें पढ़ रहे हो और दूसरी ओर फर्ज़ नमाज़ शुरू हो जाए तो फिर सुन्नतें छोड़ कर फर्ज़ में शामिल हो जाओ। और ये सुन्नतें बाद में अदा कर लो। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: इमाम के साथ डमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अधिक ज़रूरी है होगा और अधिक बरकत और इनाम का विषय है और इसमें एकता और तौहीद होती है और यह आदेश भी है कि एक इमाम के पीछे चलो।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: फर्ज़ एक इस प्रकार की चीज़ है जो तुम ने ज़रूर करनी है। अगर इमाम नमाज़ पढ़ा रहा है, तो आपको सुन्नत नफिल छोड़ कर इमाम के साथ नमाज़ में शामिल होना है। फर्ज़ नमाज़ों का अदा करना अपने समय पर ज़रूरी है और जहां तक ये सुन्नतें हैं ये आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पढ़ कर दिखाई हैं। और इन को अदा करने की ताकीद की है। परन्तु इन को आगे पीछे किया जा सकता है जब कि सुन्नतें अदा करने के लिए फर्ज़ा नमाज़ को आगे पीछे नहीं किया जा सकता।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : फर्ज़ नमाज़ अगर मस्जिद में जमाअत के साथ हो रही है तो आप हर हाल में इमाम के पीछे अदा करनी है। बाकी सब चीज़ें पीछे हो जाऐंगी। एक इमाम के पीछे चलकर एकता की अभिव्यक्ति होती है। इसलिए अल्लाह तआला ने इस का इनाम भी कई गुना अधिक कर दिया है कि यदि तुम एक हो गए तो बरकत पड़ेगी। जब तुम नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ते हो तो एक-दूसरे का आध्यात्मिक स्थान होता है, इस का भी दूसरे पर प्रभाव होता है।

*** एक बच्चे ने पूछा कि क्यों टोपी पहनती हैं।?**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस्लाम कहता है कि अल्लाह तआला के सम्मुख हो तो सिर ढका करो। यह एक शिष्टाचार का निशान है। अब जो अंग्रेज़ हैं वे कहते हैं कि शिष्टाचार की निशानी यह है कि जब वह किसी से मिलते हैं जो हेट पहना होता है उसे उतारकर झुकते हैं और कहते हैं कि इस से दूसरे का सम्मान होता है तो उन्होंने इस तरह अपनी परंपरा बनाई हुआ है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया एक बहुत बड़ा स्थान जो अल्लाह तआला के सम्मुख हाज़िर होने का है वह हज्ज है। उस समय मनुष्य ख़ुदा तआला के मार्ग में सब कुछ भूल जाता है और सब कुछ भूल कर ख़ुदा तआला के सम्मुख हाज़िर होता है। जब तुम हज रहे होते हो तो टोपी भी उतार देते हो और बाल भी कटवा देते हो तो यह अल्लाह तआला के सामने उपस्थित होने की एक ऐसी आध्यात्मिक स्थिति है जिसमें उपस्थित होने वाला अपने चरम प्रेम को व्यक्त करता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हम जो टोपी पहनते हैं तो शिष्टाचार के लिए और दूसरों के सम्मान के लिए पहलनते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि कुछ अन्य अरब मुस्लिम क़ौमें भी हैं जो टोपी के बिना नमाज़ पढ़ते हैं। यदि आपके पास किसी भी समय टोपी नहीं है, तो आप टोपी के बिना नमाज़ पढ़ सकते हो लेकिन यही कोशिश होनी चाहिए कि टोपी के साथ पढ़ो।

*** एक बच्चे ने पूछा: हुज़ूर क्या अनुभव हुआ जब हुज़ूर को पता चला कि हुज़ूर को ख़लीफा बनना है**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मैं कई बार आप लोगों की कक्षा में बता चुका हूं। एम टी ए वाले दिखाते रहते हैं। वीडियो देख लिया करो। यह बहुत मुश्किल और बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है, इसलिए बहुत बोझ महसूस होता है।

*** एक बच्चे ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर विभिन्न देशों की यात्रा करता है, क्या हुज़ूर के पास छुट्टी वाला दिन नहीं होता?**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: छुट्टी कोई नहीं थी, सप्ताह में सातों दिन काम करता हूं। काम के दौरान बस कई बार जो थोड़ा बहुत आराम मिलता है बस वही छुट्टी होती है। चौथे या पांचवें महीने के बाद कुछ दिन या घंटे या आधा दिन आराम का मिल जाता है। आप लोग जो सप्ताहांत पर छुट्टियां मनाते हो मैं नहीं मनाता।

*** एक बच्चे ने पूछा कि मुसलमान हज पर क्यों जाते हैं।?**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: इस्लाम के पाँच अरकान है, कलमा-ए-तैयबा, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज यह पांच बुनियादी चीजें हैं हज भी एक इबादत है लेकिन प्रत्येक के लिए अनिवार्य नहीं है। यह केवल उन लोगों के लिए अनिवार्य है जिनके पास यात्रा का व्यय है,रास्ता में शांति हो और यदि कोई जीवन भर में एक बार कर ले तो काफी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : ख़ाना काबा अल्लाह तआला द्वारा निर्मित पहला घर है। अल्लाह तआला फरमाता है कि यह मेरा पहला घर है। यह संभव है कि इस के बनाने के लिए आक़ाश से उल्का गिरे हों। विभिन्न ग्रहों से पत्थर टूट कर एक स्थान पर गिरे हों और फिर आरम्भ में इस से बना हो। फिर एक युग आया कि यह समाप्त हो गया। फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने उसे अपने पहले आधार पर फिर से बनाया। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में फिर से गिर गया। अत: आप के ज़माना में दोबारा उसी पहले आधार पर पुनर्निर्माण किया गया था। हजरे असवद रखने के लिए झगड़ा पैदा हो गया। आं हज़रत सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम को अवसर मिला। आप ने चादर बिछाई और सरदारों को कही कि चारों तरफ इसके कोनों को पकड़ो तो आप ने हजरे असवद उठाकर उस की जगह पर रख दिया। अत: एक दृष्टि से के आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन में ख़ाना काबा की तामीर हुई तो उसका मुख्य कार्य अल्लाह तआला ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से करवाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अत: हज एक इबादत है, जैसा कि अन्य इबादतें हैं। लेकिन यह इस प्रकार हर किसी के लिए आवश्यक नहीं जिस तरह नमाज़ हर एक के लिए ज़रूरी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हज की इबादत करने के विभिन्न तरीके हैं, जिसमें तवाफ करते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की कुरबानियों को याद करते हैं। अल्लाह तआला के सामने हम यह व्यक्त करते हैं कि हम कुछ चीज़ नहीं हैं लब्बैक लब्बैक कहते हो तो यह भी एक इबाादत है जो करते हो। यह अनिवार्य इबादत नहीं है बल्कि कुछ शर्तों के अधीन है अगर तुम्हारे पास पैसे हैं, खर्च हो, स्वास्थ्य अच्छा हो और रास्ता में अमन हो किसी प्रकार की कोई रोक न हो, जैसे अहमदियों को सरकार के तौर पर वहाँ जाने नहीं देते लेकिन फिर भी अहमदी हज करने जाते हैं यदि ये सभी चीजें इस तरह हैं और शर्तें पूरी हो रही हों और कोई रोक न हो तो फिर तुम्हें हज करना चाहिए।

* एक बच्चे ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर की पसंदीदा नज़म कौन सी है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : सभी नज़्में अच्छी हैं। हर नज़म में कोई न कोई उस का चोटी का शेर होता है जो बहुत अधिक खींचने वाला होता है।

*** एक बच्चा ने सवाल किया कि रोज़ा रखने के लिए कितने साल का होना चाहिए।?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आप लोग जो यहां बैठे हो किसी की भी आयु पूरे रोज़े वाली नहीं है परन्तु आदत डालने के लिए एक आधा रख लेना चाहिए तो अपनी ख़ुशी से रख लो। अगर सेहत अच्छी है मोटे ताज़े हैं तो फिर आदत के रूप से लम्बा रोज़ा भी रख सकते हैं परन्तु जो दुबले पतले हैं वे न रखें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया जो छात्र हैं उन पर अध्ययन करने का बोझ होता है। इन दिनों परीक्षाएं भी हो रही होती हैं इसलिए तुम में से किसी की भी आयु इतनी नहीं कि रोज़ा रखे। परन्तु जब आप सत्रह और अठारह वर्ष के हो जाते हो और जवान हो जाते हो उस समय रोज़ा रख लेना चाहिए लेकिन इससे पहले रोज़ा रखने के लिए आदत डालनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया जो लोग चार पांच साल की आयु में छोटे बच्चों को रोज़ा ज़बरदस्ती रखवाते हैं गर्मियों में विशेष कर के वह किसी भी तरह ठीक नहीं। एक बार पाकिस्तान में अख़बार में आया था कि पांच छ: साल के बच्चे को गर्मियों में रोज़ा रखवा दिया बच्चे को प्यास लगी पानी की तरफ दौड़ता था उस को कमरे में बन्द कर दिया फिर जब शाम के समय रोज़ा खोलना था इफ्तारी करनी थी तो उस के दोस्तों को बुलाया है कि हमारे घर में दावत है पहला रोज़ा बच्चे ने रखा है जब दरवाज़ा खोला तो बच्चा मरा हआ था। प्यास से मर गया। तो यह अत्याचार है। जब सहन करने की आयु हो तब रोज़ा रखना चाहिए।

*** एक बच्चे ने पूछा कि हम नमाज़ क्यों पढ़ते हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "इसलिए पढ़ते हैं कि अल्लाह तआला का धन्यवाद अदा करें। अल्लाह तआला ने हमें बनाया और इतनी चीजें दीं। हम अल्लाह तआला को सारे संसारों का रब्ब मानते हैं। उसने हमें पैदा किया हमारा पालन पोषण किया, अच्छे माता-पिता को दिया। जो हमारा ध्यान रखते हैं। हमारे लिए पढ़ने के अवसर पैदा किए और बहुत सारी चीज़ें हैं। हमारे लिए खाने पीने के अवसर और कई चीजें पैदा की हैं। यदि कोई गरीब है तो वह भी अपनी हालत में ख़ुश है। अगर कोई अमीर है तो वह भी खुश है। इसलिए हम अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करने के लिए नमाज़ पढ़ते हैं, तो फिर इस से अल्लाह तआला से सम्बन्ध पैदा हो जाता है। फिर अल्लाह तआला कहता है, मैं और भी पुरस्कार दूंगा। अल्लाह तआला ने फर्ज़ किया है कि तुम मेरी इबादत करो बल्कि अल्लाह तआला ने फरमाया है कि तुम लोगों के जन्म का उद्देश्य ही मेरी इबादत करना है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया खाते पीते तो जानवर भी हैं और दुनिया से विदा हो जाते हैं इसलिए तुम्हारा काम यह नहीं बल्कि तुम्हारा काम यह है कि तुम अपने दिमाग़ का उपयोग करो और अल्लाह तआला के आभारी बन्दे बनो और धन्यवाद का एक तरीका यह भी है कि इबादत करो बल्कि सबसे बड़ा उद्देश्य उसकी इबादत करना है ताकि अल्लाह तआला तुम्हें और अधिक इनाम दे।

*** एक बच्चे ने पूछा कि पानी क्यों बैठ कर पीने की ज़रूरत है?**

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : बैठ कर पी लो तो अच्छी बात है, बैठ कर पीना पीने सुन्नत है, बैठ कर आराम से पीना चाहिए। जल्दी जल्दी में काम नहीं करना चाहिए। अगर विवशता हो तो खड़े होकर भी पी सकते हैं कई स्थानों पर गिलास के साथ चैन लगी होती है तो खड़े हो कर पीना पड़ता है। अगर गिलास आदि नहीं है तो फिर झुक कर पीना पड़ता है। तो इन अवस्थाओं में पी लिया करो। परन्तु सावधानी और तसल्ली के साथ ठहर ठहरकर पीयो और शुक्र अदा करो। अच्छे आचरण यही हैं कि बैठ कर पीया करो।

* एक बच्चे ने सवाल किया कि कायदा क्यों पढ़ना चाहिए?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , कायदा इसलिए पढ़ो के तुम्हें कुरआन पढ़ना आ जाए। तुम स्कूल में जाते हो तो सीधे तीसरी कक्षा में तो नहीं चले जाते। तुम सबसे पहले नर्सरी में जाते हो, पहली कक्षा में जाते हो, फिर दूसरी में जाते हो, फिर तीसरी कक्षा में जाते हो। इसी प्रकार तुम कायदा पढ़ो। जब कायदा पढ़ लेते हो तो कुरआन शरीफ को पढ़ते हो। फिर कुरआन के अनुवाद को पढ़ो ताकि तुम्हें पता चले कि अल्लाह तआला ने कुरआन में क्या कहा है। फिर जो कहा है उसका पालन करो। कायदा कुरआन शरीफ पढ़ने के लिए तरबियत के रूप में पढ़ाया जाता है ताकि तुम्हें अच्छी तरह से कुरआन पढ़ना आ जाए ताकि तुम अच्छी तरह से अल्लाह तआला की बातें सीख सको।

*** एक बच्चे ने पूछा कि हुज़ूर जवानी में कौन सी खेल खेलते थे?**

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैं क्रिकेट और बैडमिंटन खेलता रहा हूं। बस ये दो खेलें ही खेलता रहा हूं।

* एक बच्चे ने सवाल किया कि जब एक बन्दा नमाज़ पढ़ा रहा हो तो उस के आगे से जाने की आज्ञा क्यों नहीं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया नमाज़ पढ़ने वाले का ध्यान न हट जाए। और यह शिष्टाचार के अनुसार भी है। इसलिए यही आदेश है कि इंतजार करो, या फिर दो सिज्दों के स्थान से फासला देकर जाओ।

*** एक बच्चे ने पूछा, कौन सी आयु में मोबाईल फोन रख सकते हैं।**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया जब तुम्हारे माता-पिता इस की अनुमति दें और जब वे निर्णय लेते हैं कि तुम को मोबाइल फोन देना है। कभी-कभी बच्चे जब स्कूल जाते हैं, तो वे बारह तेरह साल की आयु में में बच्चों को फोन दे देते हैं। लेकिन अगर तुम ने आईफोन और स्मार्टफोन और इस प्रकार की अन्य चीजें रखनी हैं और ऐप की तलाश के लिए रखनी हैं तो ग़लत कामों में पड़ सकते हो। इसलिए माता पिता तुम्हें रोकते हैं। अगर तुम ने केवल सम्पर्क करना है तो फिर सादा फोन है रख सकते हो। तुम कोई व्यापारी तो नहीं हो एक छात्र हो। मोबाइल फोन जब हाथ में होगा तो इस में ऐप्स तलाश करते रहोगे। फज़ूल किस्म की ऐप्स तुम को मिलेंगे। फिर पढ़ाई की तरफ ध्यान कम हो जाएगा। बल्कि कहते हैं कि जब से यह फोन आए हैं जिस में एप्स होते हैं तब से दुर्घटनाओं में वृद्धि हुई है। औरतें मर्द चलते फिरते सड़क पार करते समय हर समय फोन पर उंगलियां रखती हैं। इधर से कार आई, टक्कर लगी और बन्दा मर गया। मोबाइल फोन के कारण दुर्घटनाएं बढ़ी हैं और लोग मरने भी अधिक लगे हैं। लेकिन तुम्हारी अभी कोई इस प्रकार की आयु नहीं कि तुम इस प्रकार के फोन रखो। हां, अगर आपको पढ़ने की जरूरत है, तो घर पर अपने कंप्यूटर में माता पिता की निगरानी में कर लो। अगर आपको फोन कॉल की ज़रूरत है, तो बिना किसी ऐप के एक साधारण फोन रखें। बाकी अगर तुम्हारे अम्मी अब्बा को तुम पर विश्वास है तो इसे रखो। लेकिन तुम सावधानी यह करो कि बेकार किस्म की एप्स तलाश कर के या दूसरे प्रोग्राम्स इन्ट्रनेट से तलाश कर के न देखो बल्कि अच्छी चीज़ें देखो। जैसे आज कल एम.टी.ए, अल-इस्लाम वेबसाइट आईफोन पर आती है, अगर धर्म सीखना है, तो फिर इसे रखने में कोई परेशानी नहीं है।

*** एक बच्चे ने सावल पूछा, इस्लाम में संगीत की अनुमति है?**

इस सवाल के जवाब में,हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "यदि तुम ने संगीत बजा कर, नाचना कूदना है तो फिर इस की आज्ञा नहीं है हां एक सीमा तक ड्रम बजाने की अनुमति है। शादी ब्याह में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में भी दफ बजाया करते थे और ख़ुशी व्यक्त होती थी और लड़कियां यह ख़ुशी व्यक्त करती थीं तो आप ने शादी ब्याह में डोल बजा कर ख़ुशी व्यक्त कर सकते हो। लेकिन, संगीत लगा कर क्लबों में जा कर संगीत सीखो और विशेष रूप से वहां जा कर और विभिन्न प्रकार के बाजे बजाते रहो और फिर इस पर नाचो गाओ यह ग़लत है।

*** एक बच्चे ने पूछा कि हुज़ूर अनवर सफेद शेरवानी क्यों नहीं पहनते?**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने मुस्कुराते हुए करूणा करते हुए कहा तुम बहुत सारी चीज़ें मेरी पसंद की नहीं पहनते तो फिर मैं भी अपनी पसंद की पहनता हूँ।

* एक बच्चे ने पूछा कि तीन घूंटूं में पानी क्यों पीया जाता है।

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: इसका लक्ष्य यह है कि तुम आराम से पानी पीयो। धीरे धीरे पीओ। एक दम से पीते हो तो जिस बर्तन में पीते हो तो उसमें सांस नहीं लेना चाहिए। सांस लेने के परिणामस्वरूप, नाक से रोगाणु पानी के अन्दर चले जाते हैं .... एक तो यह कि वैसे भी एक घूंट लो और धीरे-धीरे पीयो। एक दम पीयो ते फंस भी जाता है। अत: धीरे धीरे पीयो। पानी एक घूंट दो घूंट लेकर गले को गीला करो फिर ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करो है। फिर दूसरा घूंट ले लो, फिर तीसरा घूंट लो। वैसे तो पानी जानवर भी पीते हैं तो जानवरों और इंसानों में फर्क होना चाहिए। कई बार जानवर एक ही सांस में लम्बा पानी पीते हैं और फिर रुक जाते हैं इन में भी अक्ल है। वह जो तीन बार में पीते हैं तो इंसान को तो अक्ल है। एक तो यह सेहत के लिए अच्छा है कि रुक रुक कर पिया जाए। कई बार बहुत प्यास लगी होती है और गर्मी से इतना गला शुष्क हो जाता है कि पानी आदमी पीता है तो पीता चला जाता है। इतनी अधिक पी लेता है कि पेट खराब हो जाता है और आदमी बीमार हो जाता है। इसलिए बेहतर यही है कि धीरे पानी पियो और गले की गीला करो। ये शिष्टाचार भी हैं। और फिर तुम्हारी सेहत भी इस से अच्छी रहती है और तुम्हें बीमार होने का ख़तरा भी नहीं होगा। अत: पानी पीते हुए अल्लाह तआला के शुक्र अदा किया करो।

*** एक बच्चे ने सवाल किया कि हुज़ूर को ख़ुत्बा तैय्यार करने में कितना समय लगता है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : कई बार दो घंटे लगते हैं और कभी-कभी इसमें पांच या छह घंटे लगते हैं। यदि बहुत सारे संदर्भ हों, तो हवाले पढ़ने में दो घंटे लगते हैं। तब मैं अपने दफतर वालों को दे देता हूं कि प्रिंट करके मुझे दे दें अगर ख़ुद तैयार करना चाहूं तो इसमें दो और तीन घंटे लगते हैं।

*** एक बच्चे ने सवाल किया कि नींद और मृत्यु के बीच क्या अंतर है?**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "जब तुम नींद के बाद दोबारा दुनिया में वापस आते हो। अल्लाह तआला कहता है कि कुछ को मैं नींद की अवस्था से दोबारा वापस भेज देता हूं। फिर जीवन देकर वापस भेज देता हूँ और जो मौत है इससे आप अगले जहान में चले जाते हो इस दुनिया में वापस नहीं आते बल्कि दूसरी दुनिया में चले जाते हो।

*** एक बच्चे ने पूछा कि अगर हमें कोई लोग कहें कि हम मुसलमान नहीं हैं, तो हमें उनका क्या जवाब देना चाहिए?**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: उनसे पूछें कि मुस्लिम का परिचय क्या है? आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो फरमाया है कि जो कलमा-ए-तैयबा " ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह " पढ़ लेता है वह मुसलमान है, जो हमारा ज़िब्ह किया खा लेता है, जो हमारा खाना खाता है हमारे साथ उठता बैठता है वह भी मुसलमान है कलमा तय्याब पढ़ने वाले मुसलमान है। हम'لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ' पढ़ते हैं। यही कारण है कि हम मुसलमान हैं। अगर वे कहते हैं कि आप मुसलमान नहीं हैं, तो उनसे पूछो कि मुसलमान कौन हैं। हमें तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जो कलिमा पढ़ ले वह मुसलमान है। यह सरल जवाब है। अत: हम मुसलमान हैं। हम कुरआन पढ़ते हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर विश्वास करते हैं। अल्लाह तआला के एक होने पर विश्वास रखते है। इस्लाम को अंतिम धर्म समझते हैं। अंतिम कुरआन को अन्तिम पुस्तक को समझते हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आख़री नबी समझते हैं। कलिमा तय्यबा पढ़ते हैं इस लिए हम मुसलमान हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हमें इस से क्या कि कोई हमारे बारे में क्या सोचता है। हम ने जवाब अल्लाह तआला को देना है उन लोगों को नहीं देना बस फिर तुम उन से कहो कि हम अपने आप को मुसलमान समझते हैं तुम नहीं समझते हो न समझो। हमें तुम्हें समझाने की ज़रूरत नहीं। हम ने तो अल्लाह तआला को जान देनी है मरने के बाद किसी इंसान के पास तो नहीं जाना।

*** एक बच्चे ने पूछा कि आप ने यह अंगूठी क्यों पहनी हुई है?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इस अंगूठी की विशेषता यह भी है कि यह हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अंगूठी है इसलिए भी पहनी हुई है कि इस लिए भी पहनी हुई है कि बड़ी मुबारक और बरकत वाली अंगूठी है। हजरत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को अपने पिता की मृत्यु पर यह इल्हाम हुआ था कि अलैसल्लाहो बिकाफिन अब्दहू कि क्या अल्लाह अपने बन्दा के लिए पर्याप्त नहीं है। इस अंगूठी को बने हुए एक सौ पेंतीस छत्तीस साल हो गई हैं।

*** एक बच्चे ने सवाल किया कि इस्लाम में 73 संप्रदाय क्यों हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इतने संप्रदाय को अन्य धर्मों के भी हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई हुई थी कि इतने फिर्के मुसलमानों में हो जाऐंगे। और उन में तौहीद तथा एकता नहीं रहेगी। जो 73 वां फिर्का होगा वह सच्चाई पर होगा यह फिर्का उस समय बनेगा जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दुनिया में पधारेंगे। यह तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी है। अब सुन्नियों के 30,35 फिर्के हैं शीयों के 34,35 फिर्के हैं। मुख्य फिर्के तो केवल दो ही हैं शीया तथा सुन्नी इन दोनों के अन्य फिर्के हैं। तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि आख़री ज़माना में इतने फिर्के होंगे। इस का अर्थ यह था कि इस्लाम में मतभेद पैदा हो जाएगा। लोग एक नहीं रहेंगे। एकता तथा इकाई नहीं रहेगी। तो उस समय इमाम महदी का प्रादुर्भव होगा।

* एक बच्चे ने पूछा कि अहमदी हज क्यों नहीं कर सकते?

इस सवाल के जवाब में,हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैंने अभी बताया है कि अहमदी हज करते हैं। हज के लिए कुछ शर्तें हैं। यात्रा के लिए खर्च हो, यात्रा की सुविधा हो। स्वस्थ हो और कोई खतरा न हो। तुम्हें हज करने से रोका न जाए। तो ये यह हज करने वालों के लिए शर्तें हैं। अब अहमदियों को हज करने से रोका जाता है। इसलिए अहमदी खुले रूप से और यह स्पष्ट कर के कि हम अहमदी हैं हज नहीं कर सकते क्योंकि सऊदी सरकार फिर प्रतिबंध लगाती है, अहमदी इन सब के बावजूद अहमदी हज करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह ने भी हज किया था और कई अहमदी हज करते हैं। हर साल कई लोग हज पर जाते हैं। हुकूमत की तरफ से रोक के कारण अपने आप को छुपाकर हद करना पड़ता है।

* एक बच्चे ने पूछा कि हम अपने दोस्तों के साथ कैसे तब्लीग़ कर सकते हैं।?

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया अपने दोस्तों को अच्छा नमूना दिखाएं। उन को पता हो कि तुम अहमदी मुसलमान हो। ख़ुदा को एक विश्वास करने वाले में हो। कुरआन करीम का पालन करने वाले हो। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वाले हो। अहमदी धर्म तुम को अच्छी चीजें सिखाता है। तुम्हें यह अच्छी बातें कुरआन ने सिखाई हैं। हजरत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सिखाई हैं। जब तुम दूसरों को अच्छी बातें सिखाओगे और फिर नेक नमूना बनोगे तो लोग तुम्हारी तरफ ध्यान देंगे। और तुम्हारी बातें अच्छी लगेंगी। अतध अपने आप को अच्छा कर के दिखाओ तो लोग तुम्हारी तरफ आएंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ के साथ अत्फाल की यह कक्षा 7 बजकर 40 मिन्ट पर समाप्त हुई।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 2 August 2018 Issue No. 31

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हज़रत उमर फारूक रज़ि अल्लाह

आप कूरैश के सम्माननीय लोगों में से थे। ज़माना जाहलियत में आपके ख़ानदान से सिफारत विशेष थी अर्थात जब कूरैश की किसी दूसरे कबीले से लड़ाई होती थी तो आप रज़ि अल्लाह के बूज़र्गों को सफीर (राजदूत) बना कर भेजा जाता था। आप रज़ि अल्लाह का वंश आठँवी नस्ल में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिलसिला वंस से मिल कर एक हो जाता है। आपकी कुन्नियत अब्बू हफज़ थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको फारूक के उपनाम से विभूषित फरमाया था। आप रज़ि अल्लाह हिजरी नबवी से चालीस साल पहले पैदा हुए। लड़कपन में ऊंठों के चराने का शुग़ल था , जवान होने के बाद अरब के नियम के अनुसार वंशावली, शस्त्र विद्या , घोड़ा चलाना और पहलवानी की शिक्षा हासिल की। आपकी गिनती मुल्क अरब के नामी पहलवानों में होती थी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बअसत के समय फतूहुल बलदान की रिवायत के अनुसार कूरैश में सिर्फ 17 आदमी ऐसे थे जो लिखना पढ़ना जानते थे उन में हज़रत उमर रज़ि अल्लाह भी थे। आप चालीस मुसलमानों और ग्यारह औरतों के बाद इस्लाम लाए। कइयों को कथन है कि 39 मर्दों और 30 औरतों के बाद और जब कि कुछ के निकट 45 मर्दों और 11 औरतों के बाद इस्लाम में दाख़िल हुए। आप आरम्भिक ईमान लाने वालों और अशराह मुबशरा (वे दस प्रसिद्ध सहाबी जिन को इस संसार में ही आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जनन्ती होने की ख़बर दी थी।) में हैं आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खुसर भी हैं। आपकी गिनती उल्मा और प्रसिद्ध सहाबा में है।

हज़रत फारूक रज़ि अल्लाह का हुलिया

हज़रत फारूक आज़म रज़ि अल्लाह की रंगत सफेद थी। लेकिन सुर्खी उस पर ग़लिब थी। कद निहायत लम्बा था पैदल या चलने में मालूम होता था कि सवार जा रहे हैं गालों पर गोशत कम था मूँछे बड़ी, सिर के बाल सामने से उड़ गए थे। इब्न असाकर रज़ि अल्लाह ने रिवायत की है के हज़रत उमर रज़ि अल्लाह दराज़ कद लहीम शहीम थे , रंगत में सुर्खी ग़ालिब थी गाल पिचके हुए मूँछे बड़ी थीं और इनके चारों ओर सुर्ख़ी थी।

इलाही वादा का दोबारा ज़हूर

इंसान इस दुनिया में फानी है और एक ना एक दिन उसे इस दुनिया को छोड़ कर जाना है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह ने जब यह महसूस किया के अब उनका आख़री समय क़रीब है तो आपको उम्मत की फिक्र परेशान करने लगी। शुरू माह जमादिल सानी 13 हिजरी में आप (अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह) को बुख़ार हुआ। 15 दिन बराबर शिद्दत का बुख़ार रहा। जब आप को यकीन हो गया कि आख़री समय क़रीब आ पहुँचा है तो आपने सबसे पहले हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ को बुला कर ख़िलाफत के बारे में मशवरा किया। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि अल्लाह से आपने फरमाया के उमर की सख़्ती का कारण सिर्फ यह है कि मैं नरम तबीयत रखता था। मैंने ख़ुद अंदाज़ा कर लिया है के जिस मामला में मैं नर्मी करता था इस में उमर रज़ि अल्लाह की राय सख़्ती की तरफ झुकी हुई नज़र आती थी लेकिन जिन मामलों में मैंने सख़्ती से काम लिया उन में उमर रज़ि अल्लाह हमेशा नरमी का पहलू धारण करते थे। मेरा ख़याल है कि ख़िलाफत उनको ज़रूर नर्म दिल और मध्य मार्ग वाला बना देगी। इसके बाद आपने हज़रत उसमान रज़ि अल्लाह, हज़रत अली करम अल्लाह रज़ि और हज़रत तलहा रज़ि से इस बारे में मश्वरा किया। फिर आप ने हज़रत उसमान ग़नी रज़ि अल्लाह को बुला कर वसीयत नामा लिखने का हुक्म दिया। बीमारी की प्रचुरता की वजह से आप रुक रुक कर बोलते जाते और हज़रत उसमान लिखते जाते थे इसका वसीयत नामा का मज़मून था

" यह वह अहद है जो अबू बकर रज़ि अल्लाह ख़लीफा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस समय किया है जब के उसका आख़री समय दुनिया है और अव्वल समय आख़िरत का है ऐसी हालत में काफिर भी ईमान लाता और फाजिर भी यकीन ले आता है। मैंने तुम लोगों पर उमर बिन अल्-ख़त्ताब रज़ि को मूकर्रर किया है और मैंने तुम लोगों की भलाई और बेहतरी में कोताही नहीं की अत: अगर उमर रज़ि अल्लाह ने सबर तथा इंसाफ से काम लिया तो यह मेरी इसके साथ वाकफियत थी और अगर बुराई की तो मुझ को ग़ैब का ज्ञान नहीं है और मैंने तो बेहतरी और भलाई का इरादा किया है और हर शख़्स को अपने कर्मों के फल से सामना पड़ना है।"

जब यह तहरीर लिखी जा चुकी तो आपने हुक्म दिया के लोगों को पढ़ कर सुना दो और फिर ख़ुद इस बीमारी की हालत में बाहर तशरीफ लाए और मुसलमानों को मुख़ातिब करके फरमाया के मैंने अपने किसी प्यारे रिश्तेदार को ख़लीफा नहीं बनाया बल्कि राय वाले लोगों से मशवरा कर लेने के बाद ख़लीफा बनाया है अत: क्या तुम लोग इस शख़्स के ख़लीफा होने पर राज़ी हो जिसको मैंने तुम्हारे लिए चुना है। यह सुनकर लोगों ने कहा के हम आपके चुनने को और मश्वरे को पसन्द करते हैं फिर हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने फरमाया कि तुम को चाहिए के उमर फारूक़ का कहना सुनो और इसकी आज्ञापालन करो सब ने आज्ञापालन का इकरार किया।

यह तहरीर और वसीयत इत्यादि की कारवाई 22 जमादीउल सानी 13 हिजरी दो शनबा के दिन हुई। 22 और 23 के मध्य रात को नमाज़ मग़रिब के बाद हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह की वफात हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

प्यारे पाठको! अल्लाह तआला ने हज़रत उमर फारूक़ के द्वारा उस बीज को जिसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम के रूप में लगाया था और जिसे हज़रत अबूबकर सींच कर गए थे दोबारा परवान चढ़ाया। और इस्लाम को तरक्की की मंज़िलें प्रदान की। हज़रत उमर का दौरे ख़िलाफत, ख़िलाफत राशदा का ही सुनहरी दौर ख़िलाफत है और आपके चुनने के द्वारा अल्लाह तआला ने दोबारा आयत इस्तिख़लाफ के विषय को मोमेनीन पर ज़ाहिर फरमाया और इस बात को साबित किया कि हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह का चुनना सही था। हज़रत उमर फारूक़ लगभग 10 वर्ष ख़िलाफत के महत्तवपूर्ण पद रहे। आपके द्वारा बे-शुमार ख़ुदा तआला के निशान और समर्थन का प्रकट हुए। आयत इस्तख़लाफ में अल्लाह तआला ने खलीफाओं की ईलाही सहायता और उनके द्वारा भय को अमन में बदलने का वादा फरमाया है। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह के ख़िलाफत के युग में हमें विशेष रूपसे अमन तथा शान्ति की अवस्था नज़र आती है। बेशक मुसलमानों ने हक के लिए लड़ाइयां लड़ीं और कामयाब हुए मगर इनके द्वारा हमेशा भय तथा अशान्ति से पीड़ित लोगों को अमन नसीब हुआ। यहाँ तक के युद्ध क्षेत्र के लोग दुआ करते थे कि मुसलमान दोबारा उन पर हुकमरान बनें।

प्रिय पाठको। आयते इस्तिख़्लाफ में अल्लाह तआला ने मोमेनीन से ख़िलाफत के कयाम का वादा फरमाया है और खलीफाओं की सहायता का वादा फरमाया है अर्थात ख़ुदा तआला जिसको ख़लीफा बनाता है उसे अपना समर्थन भी देता है। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो सच्चे ख़लीफा थे। आप रज़ि अल्लाह अन्हो के द्वारा भी ख़ुदा तआला ने अपने गुणों का ज़ाहिर फरमाया और लोगों को ख़लीफा वक्त के इल्मों इरफान वा इंसाफ के नज़ारे दिखाए। ख़ुदा के एक और सच्चे ख़लीफा हज़रत मिर्ज़ा बशीरूद्दीन महमूद अहमद ख़लीफातुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो फरमाते हैं:-

" ख़दा तआला जिस शख़्स को ख़िलाफत पर खड़ा करता है वह इसको ज़माना के मुताबिक ज्ञान भी प्रदान करता है अगर वह अहमक , जाहिल और बेवकूफ होता है ..... तो इसके क्या अर्थ हैं के ख़लीफा ख़ुद ख़ुदा तआला बनाता है इसके तो अर्थ ही यह हैं कि जब किसी को ख़ुदा ख़लीफा बनाता है तो इसे अपने गुण देता है अगर वह इसे अपनी ख़ूबी नहीं देता तो ख़ुदा तआला के ख़ुद ख़लीफा बनाने के अर्थ ही क्या हैं।

(अलफज़ल 22 नवम्बर 1950 इ० अलफुरकान मई जून 1967 सफा 37)

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad